डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 235 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | रविवार 09 जून 2024 | मूल्य 2 रुपया

प्रशासन की आपाधापी, नरवरे की दादागिरी

बगैर मुआवजा दिए तोड़ डाली आरआरबी की दीवार

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मुक्ति धाम के निकट शिवना नदी पर नवीन ब्रिज का काम चल रहा है। पिछले 4 साल से चल रहे ब्रिज निर्माण का कार्य 2 साल पहले ही पूर्ण हो जाना था। अधिकारियो के चहेते ठेकेदार ने काफ़ी समय ख़राब कर दिया है। लेकिन, ठेकेदार की लापरवाही व ढीलपोल रवैये के चलते यह काम बहुत लेट हो गया। यही ठेकेदार संजीत नाका ओवरब्रिज भी बना रहा है, उस ब्रिज का अभी पूरा काम ही नहीं हुआ है और ठेकेदार वहां के काम क़ो अधर में लटकाकर शिवना ब्रिज के काम में जुट गया है।

सेतु विकास निगम के अधिकारियों की बात करें, तों वह ठेकेदार के साथ हमेशा इस तरह खड़े रहते है, जैसे सुख-दुख के साथी हों। सेतु विकास निगम के अधिकारियो ने अब आनन फानन में शिवना ब्रिज के निकट बन रहे ओवरब्रिज के लिये आसपास के क्षेत्र की जगह पर कार्यवाही कर पुल के निर्माण के साथ ही अप्रोच रोड बनाने के उपयोग में लेने के लिए जमीन क़ो अधिग्रहण करने हेतु दादागिरी शुरु कर दी। शुक्रवार को स्थानीय प्रशासन अमले के साथ मुक्तिधाम के निकट पहुंचा। जहां राजाराम ब्रदर्स संचालको को विश्वास में लिए बगैर दिवार को तोड़ दिया। करीब 850 स्क्वायर मीटर जगह को अधिग्रहित किया गया है, जिसके एवज में 22 लाख रूपये का मुआवजा पारित

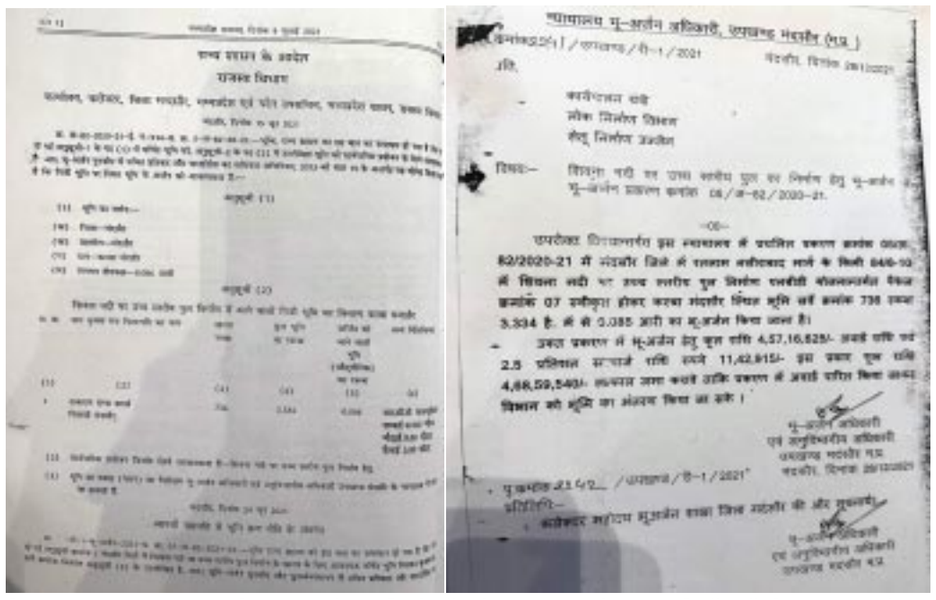

किया था। राजाराम ब्रदर्स द्वारा मुआवजा नहीं लिए जाने पर एसडीएम कार्यालय में जमा करवा दिया है। इसमें बडी बात यह है की जिस जगह का अधिग्रहण किया गया है, उसका मुआवजा असिंचित भूमि के रूप में आंका गया हैं। जबकि, राजपत्र प्रकाशन में इस भूमि को व्यवसायिक कहा गया हैं। लेकिन, प्रशासनिक दुर्भावना के चलते शहर के सेकड़ो लोगो को रोजगार देने वाले संस्थान को परेशान किया जा रहा हैं।

बता दें की मुक्तिधाम के निकट बन रहे पुल निर्माण में गर्डर का काम अभी पूरा नहीं हुआ है और आसपास के क्षेत्र में काम शुरु कर दिया है। जिससे आम लोगों के निकलने के लिए अप्रोच सड़क जल्द बन सके। इधर संजीत नाका ब्रिज का निर्माण लगभग पूरा हो चूका हैं। लेकिन, वहां अभी भी एप्रोच रोड का काम शुरु नहीं हुआ हैं। जबकि, वहां किसी प्रकार का अधिगृहण नहीं किया जाना है। इधर मुक्तिधाम के निकट आसपास की जगह की तोड़ना शुरु कर दिया। इस मामले में ज़ब तहसीलदार से बात की तों उन्हें भी मामला पूरा संज्ञान में नहीं था। उनका कहना था की यहां पुल निर्माण के लिए अधिग्रहण किया गया है। इसलिए आज कार्यवही हो रही है।

लोक निर्माण विभाग के एसडीओ प्रवीण नरवरे से जब पूछा गया की यह जगह व्यवसायिक हैं फिर आपने असिंचित भूमि मानकर मुआवजा कैसे दिया। जिसकी भूमि हैं, उसे भी संतुष्ट करना चाहिए था। इस पर वे कोई जवाब नहीं दें पाए। वे इतना ही कह सके की हमने संबधित को मुआवजा दें दिया हैं।

पिपलिया मंडी ओवर ब्रिज को लेकर देश भर में चर्चित है नरवरे...

पिपलिया मंडी का रेलवे ओवर ब्रिज और उसकी डिजाईन को लेकर लोक निर्माण विभाग के एसडीओ प्रवीण नरवरे (सेतु निगम) पूरे देश में चर्चित है। ठेकेदार और भूमाफियाओ के चहेते इस अधिकारी ने बगैर सूचना दिए दिवार तोड़ने का आदेश दे डाला। इधर पिपलिया मंडी ओवर ब्रिज बनने के बाद भी वहां के लोग खासे परेशान है। वे हर पल नरवरे को ही याद करते रहते है!

अयोध्या, प्रयाग और वाराणसी का हश्र देख भी समझ नहीं रहे...

इधर आमजन के बीच शनिवार को यह चर्चा दिन भर चलती रही कि अयोध्या, प्रयाग (इलाहाबाद) और काशी में लोकसभा चुनाव की स्थिति को देखने के बाद भी स्थानीय प्रशासन को समझ नहीं आ रहा है। स्थानीय प्रशासन केवल यह देख रहा है कि इस बार प्रदेश की सभी 29 सीट जीत ली है, इसलिए हर तरह की दादागिरी चल जाएगी। लेकिन, यह नहीं पता है कि यह जनता है, कभी सिर पर बैठाती है तो कभी पटक भी देती है। खैर, अधिकारी तो आज है कल चले जाएंगे। लेकिन, स्थानीय जनप्रतिनिधियो को यह ध्यान रखना चाहिए कि जो उद्योग शहर के सैकड़ो लोगो को रोजगार दे रहा है, उसे इस तरह अपनी जमीनो की कीमत बढ़ाने के लिए परेशान नहीं करना चाहिए।

ना नोटिस मिला ना मुआवजा, मामला अदालत में लंबित...

मामले में राजाराम ब्रदर्स के मैनेजर से चर्चा की गई तो उनका कहना था की हमें दीवार तोड़ने का ना तो नोटिस मिला हैं ना ही मुआवजा मिला हैं। मामला अदालत में लंबित हैं। इस मामले में कोई फैसला नहीं हुआ हैं। हमारा मुआवजा 4 करोड़ 68 लाख रुपये पास हुआ था, जो सेतु विकास निगम ने आज तक नहीं दिया हैं और दादागिरी से फैक्ट्री की दीवार तोड़ दी गई। यह सरासर ज़्यादती है।

मामला मेडिकल कॉलेज में भर्ती का...

नियम विरुद्ध 26 फीसदी पर हुई नॉन मेडिको भर्ती

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नर्सिंग घोटाले के बाद अब मेडिकल कॉलेजों में भर्ती को लेकर लापरवाही का मामला सामने आया है। यही कारण है कि चिकित्सा शिक्षा विभाग एक बार फिर सवालों के घेरे में है। प्रदेश के आधा दर्जन नए मेडिकल कॉलेजों में 21 विभागों के 233 पदों पर सीधी भर्ती की जा रही है। इसको लेकर नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) की वेबसाइट पर साफ किया गया है कि नॉन क्लीनिकल विभागों में कुल पदों के सिर्फ 15 फीसदी पर ही नॉन मेडिको की भर्ती होनी चाहिए।

इस नियम को ताक पर रखते हुए अधिकारियों ने बायोकेमेस्ट्री विभाग के लिए 50 फीसदी पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी कर दिए। इसके बाद बचने के लिए सिर्फ 26 फीसदी पर भर्ती कर ली गई। जब मामला खुला तो बायोकेमेस्ट्री विभाग के परिणामों पर ही रोक लगा दी गई।

ऐसे समझें कहां हुई गड़बड़ी...

मंदसौर मेडिकल कॉलेज के अलावा श्योपुर, सिवनी, नीमच, सतना, सिंगरौली मेडिकल कॉलेज में सीधी भर्ती की जा रही है। नियम के तहत इनमें सिर्फ दो पदों को नॉन मेडिको कैंडीडेट से भरा जाना था। लेकिन अधिकारियों ने विज्ञापन 12 पदों के लिए जारी किया। इसके बाद 6 पदों पर भर्ती भी कर ली गई। जिसपर रोक लगा दी गई है। चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा ही इस मामले की जांच की गई। जिसमें पाया गया कि इन नियुक्तियों के लिए एक मेडिकल ऑफिसर को इंचार्ज बनाया गया है।

इनका कहना...

बायोकेमेस्ट्री विभाग के परिणाम जारी नहीं किए गए हैं। इसका कारण कुछ तकनीकी समस्या रही है।

डॉ. ऐके श्रीवास्तव, संचालक, चिकित्सा शिक्षा विभाग

दो दिन पूर्व घायल मजदूर की मौत

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। शहर के सिटी थाना क्षेत्र के नीमच-मनासा मार्ग पर मंगलम होटल के पास दो दिन पहले एक सड़क हादसा हो गया था। जिसमें दमोह से नीमच मजदूरी करने आया युवक और उसकी पत्नी घायल हो गई थी। घायल युवक का उपचार बड़े अस्पताल में चल रहा था। शुक्रवार-शनिवार की रात में युवक की मौत हो गई। शनिवार को परिजनों की मौजूदगी में मृतक के शव का पोस्टमॉर्टम किया गया।

जानकारी के अनुसार गुरुवार 6 जून को नीमच-मनासा मार्ग पर विजयसिंह पिता नारायण सिंह उम्र 35 वर्ष निवासी हरदुवा जिला दमोह अपनी पत्नी के साथ बाइक पर गिरदोडा से खरीदारी करने नीमच आ रहा था। इसी दौरान सामने से आ रहे एक सवारी टेम्पो ने उसे जोरदार टक्कर मारी दी। हादसे में विजय और उसकी पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। जिन्हें इलाज के लिए नीमच के बड़े अस्पताल में भर्ती किया गया था। जहां इलाज कर दौरान उसकी मौत हो गई।

मृतक अपनी पत्नी के साथ 4 साल पहले दमोह से नीमच मजदूरी के लिए आया था। वह अपने दो बच्चों ओर पत्नी के साथ यही रह रहा था। बताया जा रहा है कि वह वर्तमान में किसी निर्माणाधीन कालोनी में काम कर रहा था। शनिवार को पोस्टमॉर्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया। नीमच सिटी थाना पुलिस के सत्यनारायण बोरिया ने बताया टैंपो चालक के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया गया है। मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी गई है। इसमे भादंसं की धारा 304ए की बढ़ोतरी की जाएगी।

शिमला-मसूरी नहीं, युवाओं को रास आ रही चारधाम यात्रा

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। गरमी की छुट्टियो में युवाओं का रुझान शिमला-मसूरी, कुल्लू-मनाली, शिमला, नैनीताल की जगह धार्मिक टूरिज्म की ओर अधिक बढ़ रहा है। परिवार या दोस्तो के साथ युवा चारधाम यात्रा पर जाना पसंद कर रहे हैं। मंदसौर सहित प्रदेश भर में यहीं स्थिति है। जिसके चलते बड़े शहरों में तो टूर एंड ट्रेवल्स के पास चारधाम यात्रा के लिए युवाओं की काफी डिमांड आ रही है। युवाओं की मांग को देखते हुए टूर ट्रेवल्स ने अलग-अलग पैकेज भी बनाए हैं। इनमें 50 हजार रुपए से लेकर एक लाख रुपए तक पैकेज युवा ले रहे हैं।

टूर एंड ट्रैवल्स संचालकों के मुताबिक चारधाम यात्रा पर जाने वालों में अब युवाओं की संख्या में खासी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। इसके साथ ही युवाओं का धार्मिक स्थलों के प्रति रुझान बढ़ाने में सोशल मीडिया की भी अहम भूमिका है। इन्फ्लुएंसर भारत में स्थानों के बारे में लोगों को जागरूक कर रहे हैं। टूर एंड ट्रेवल्स संचालक प्रमोद जैन के अनुसार, एक समय था जब युवाओं में शिमला, मनाली, मसूरी, नैनीताल जैसे हिल स्टेशन जाने का ही क्रेज देखने को मिलता था। अब ये ट्रेंड बदलता दिख रहा है। युवा वर्ग अब चारधाम जाना अधिक पसंद कर रहे हैं। चारधाम यात्रा में भगवान के दर्शन के साथ-साथ ठंडे स्थानों का आनंद भी मिल जाता है। मई से जून माह के बीच बड़ी संख्या में यंगस्टर्स स्प्रिचुअल टूर पर गए हैं और आगे जुलाई तक कई लोगों की बुकिंग है।

कोरोनाकाल के बाद दिखा बदलाव...

टूर एंड ट्रेवल्स संचालक अभय श्रीमाल के मुताबिक आमतौर पर गर्मियों की छुट्टियों में बुजुर्ग चारधाम की यात्रा का टिकट बुक कराते हैं। इस बार 80 फीसदी के लगभग युवाओं ने चारधाम यात्रा की योजना बनाई है। कोरोनाकाल के बाद युवाओं में यह बदलाव देखने को मिल रहा है।

ट्रेंचिंग ग्राउंड पर जल रहा कचरा

एक किमी तक का क्षेत्र हो रहा प्रभावित, लोगों का निकलना मुश्किल, कई गांवों के लोग परेशान

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। गुराड़िया बायपास स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पर आग लगने की शिकायतों की सुनवाई नहीं होने के बीच जहरीले धुएं से आसपास क्षेत्र के हजारों लोगों का जीना मुहाल हो गया है। लोगों का कहना है कि एक किमी के दायरे में दम घुट रहा है।

कई सालों के इंतजार के बाद जैसे-तैसे बायपास स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पर कचरे के पहाड़ को हटाने की तैयारी तो हो गई है। लेकिन, इस बीच यहां आए दिन लग रही आग लोगों के लिए परेशानी का सबब बन गई है। आसपास के गांवों के हजारों लोग जहरीले धुएं के कारण परेशान हो रहे हैं। लोगों का कहना है कि पूर्व में बदबू के कारण परेशानी थी, अब आग लगने के कारण जहरीले धुएं से जीना मुहाल हो गया है। बता दें कि शहर से हर रोज बड़ी मात्रा में कचरा बायपास स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पहुंच रहा है। सालों से निष्पादन नहीं होने के कारण ट्रेंचिंग ग्राउंड पर कचरे का पहाड़ बन चुका है।

60 टन कचरा उगलता है मंदसौर...

मंदसौर शहर हर दिन 60 टन कचरा उगलता है। जो ट्रेंचिंग ग्राउंड पर डाला जाता है। इसके कारण कचरे में बदबू से लेकर गंदगी फैलती है। कचरे में सुलगती आग आसपास के गांवों में फैलते धुएं के रुप में ग्रामीणों की परेशानी बनी हुई है। हालांकि नपा ने कचरे के निष्पादन से लेकर आग को कंट्रोल करने के लिए यहां तमाम प्रकार के संसाधन लगा रखे है। लेकिन, यह नाकाफी साबित हो रहे है। ग्रामीण मंदसौर से निकलने वाले कचरे से हर दिन परेशान हो रहे है।

इन गांवों में पड़ रहा दुष्प्रभाव...

शहर से दूर फोरलेन हाईवे क्षेत्रमें ट्रेंचिंग ग्राउंड बना है जो सिंदपन फंटे पर है। जहां कचरा डाला जा रहा है। वहां से सिंदपन एक किमी दूर है। यहां से निकलता धुआं सीधे गांव में पहुंचता है, जो यहां निवास करने वाले 400 घरों के करीब ढाई हजार लोगों को सीधे प्रभावित करता है तो हाईवे से निकलने वाले राहगीरों को भी परेशानी होती है। इसके अलावा बेलारा, बोतलगंज, गुराडिया, हरीपुरा, साबाखेड़ा गांव में भी ट्रेंचिंग ग्राउंड के धुएं का सीधा इफेक्ट पड़ता है। धुएं के अलावा भी ट्रेंचिंग ग्राउंड से उठने वाली बदबू गंदगी के साथ गांवों तक पहुंचती है जो गांवों के वातावरण को प्रदूषित कर रही है। इसके अलावा कचरा डाले जाने के दौरान यहां जाम भी लग जाता है। इन सबके कारण ग्रामीण परेशान हो रहे है।

मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है धुआं...

विशेषज्ञों की माने तो कचरे में प्लास्टिक सहित पॉलन व अन्य चीजें रहती है। इनसे निकलने वाले धुएं में कई प्रकार की गैस होती है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। सिंदपन निवासी मदनलाल राठौर ने बताया कि सिंदपन मगरे पर जो ट्रेंचिंग ग्राउंड बनाया है। वहां पर आए दिन आग लगने के मामले सामने आ रहे हैं। कुछ दिन दिन पहले ही आग लगने से क्षेत्रभर में गैस त्रासदी जैसा माहौल लग रहा था। इस जहरीले धुएं के कारण ट्रेंचिंग ग्राउंड के समीप रास्ते से गुजरते समय मेरी बेटियां बेहोश हो चुकी हैं। निराकरण जरूरी है। नपा को भी कई बार शिकायत की लेकिन सुनवाई नहीं हुई।

आखिर कब आएगी मशीन, लोगों को मिलेगी परेशानी से मुक्ति...

नपा का दावा है कि संबंधित कंपनी द्वारा ट्रेंचिंग ग्राउंड पर पूरा सेटअप लगाया जाएगा। विभिन्न मशीनों की सहायता से कचरे में से पॉलिथीन, रबर, मिट्टी सहित करीब 12 प्रक्रिया की सामग्री को अलग-अलग करेंगे। इसके बाद बड़ी कंपनियों को विक्रय करने के साथ इन सामग्रियों का रीयूज भी करेंगे। खाद बनाने, मिट्टी से भराव सहित अन्य तरीकों से सामग्री को उपयोग में लाया जाएगा। कचरा निष्पादन की प्रक्रिया शुरू होने के कुछ समय बाद कचरे का पहाड खत्म होने के साथ लोगों की परेशानी भी खत्म हो जाएगी।

कचरा नष्ट करने के लिए कन्वेयर वेल्ट स्क्रीनिंग मशीन नगर पालिका द्वारा मंगाई जा रही है। सूत्रो के अनुसार इस मशीन के लिए टेण्डर हो गए है। जल्द ही यह मशीन मंदसौर नपा को मिल जाएगी। जिसे ट्रेंचिंग ग्राउंड पर स्थापित किया जाएगा। यह मशीन कचरे में से प्लास्टीक अलग करेगी और अन्य कचरे को खत्म कर खाद के रूप में परिवर्तित कर देगी। इसके साथ ही ट्रेंचिंग ग्राउंड को पुनः पहले जैसी जमीन बना देगी।

उज्जैन इंजीनियरिंग कॉलेज करेगा मंदसौर की पेयजल योजनाओं का ऑडिट

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर की पेयजल योजनाओं का ऑडिट उज्जैन इंजीनियरिंग कॉलेज करेगा। सरकार ने मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (मैनिट) समेत प्रदेश के 7 इंजीनियरिंग कॉलेज को राज्य के 31 शहरों की पेयजल परियोजनाओं के तकनीकी ऑडिट कराने के निर्देश दिए है।

राज्य सरकार ने अमृत-1 योजना में पूरी हुई प्रदेश की सभी 31 पेयजल परियोजनाओं की जांच कराने का निर्णय लिया है। संभागवार इंजीनियरिंग कॉलेजों को इसका काम सौंपा जाएगा। मैनिट को भोपाल, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल की पेयजल योजनाओं के ऑडिट का जिम्मा दिया गया है। वहीं इंदौर के एसजीएसआईटीएस से इंदौर, देवास, खंडवा और पीथमपुर की पेयजल योजनाओं का ऑडिट कराया जाएगा। ग्वालियर के एमआईटीएस को डबरा, दतिया, ग्वालियर, गुना और शिवपुरी की पेयजल योजनाओं का ऑडिट करना है। रीवा इंजीनियरिंग कॉलेज को रीवा, सतना, सिंगरौली का जिम्मा दिया है। उज्जैन इंजीनियरिंग कॉलेज को नागदा, नीमच, मंदसौर, जबलपुर इंजीनियर कॉलेज को छिदवाडा, जबलपुर, कटनी का ऑडिट करना है। सागर के आईजीईसी को छतरपुर की पेयजल योजनाओं के ऑडिट का जिम्मा सौंपा गया है।

राज्य सरकार जल्द ही प्रदेशभर में अमृत मित्र अभियान शुरू करेगी। इस अभियान के तहत सभी नगरीय निकायों में पेयजल टेस्टिंग टीम बनाई जाएगी। इसके अलावा पेयजल नेटवर्क में सुधार किया जाएगा। जलकर वसूली में पूरी तरह ई-गवर्नेंस को लागू करते हुए ऑनलाइन बिलिंग और भुगतान सिस्टम लागू किया जाएगा। पेयजल लाइनों के फॉल्ट ओर लीकेज को तत्काल पता लगाने के लिए स्काडा सिस्टम को अमल में लाया जाएगा।

खेत से फूल तोड़ने गए किसान की बाईक चोरी

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नई आबादी थाना क्षेत्र के मेनपुरिया पुरिया मुख्य मार्ग से एक किसान की बाईक अज्ञात बदमाश चुरा ले गया। मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है। किसान दिनेश माली ने बताया कि वह सुबह 5 बजे गुलाब तोडने के लिए खेत पर गया था। अपनी बाइक एमपी 14 जेडए 5754 एचएफ डिलक्स खेत पर बने बाड़े के बाहर रखकर पीछे खेत में गुलाब तोड़ रहे थे। आधे घंटे बाद आकर देखा तो कोई अज्ञात व्यक्ति बाइक चुरा ले गया। थाना नई आबादी पर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। मामले में पुलिस जांच कर रही हैं।

बिना मुण्डेर के कुए में गिरा ट्रेक्टर-टेंकर, 2 चोंटिल

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। गांव लसुड़िया राठौर में सडक किनारे बने बिना मुण्डेर के कुए में ट्रेक्टर, खाली पानी के टेंकर सहित गिर गया। इसमें ड्राइवर सहित 2 को चोंटे आई। जानकारी के अनुसार शनिवार शाम 4.30 बजे करीब चावली मार्ग पर सडक किनारे बने बिना मुण्डेर के खाली कुए में ट्रेक्टर, टेंकर सहित गिर गया। टेंकर में पानी नही था। ट्रेक्टर पर बंटी राठौर के अलावा एक युवक ओर सवार था। दोनों भी ट्रेक्टर के साथ अन्दर गिर गए, गनीमत रही, दोनों को मामूली चोंटे आई। कुआ करणसिंह का बताया जा रहा है। देर शाम ट्रेक्टर व टेंकर को बाहर निकाल लिया गया।

शनिवार को भी रही उमस भरी गरमी, बारिश का अलर्ट

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। शनिवार को दिन भर उमस भरी गरमी रही। शाम को भी मौसम में ज्यादा बदलाव नहीं दिखा। जबकि, शुक्रवार को दिन में तेज धूप रही। शाम को अचनाक मौसम में बदलाव आया। बादल छाए और बारिश शुरू हो गई। देर रात तक रुक-रुक कर बूंदाबांदी होती रही। इस दौरान तेज हवा भी चली।

शनिवार भी ऐसा ही मौसम बना रहने का अनुमान था। सुबह बादल छाए हुए हैं। हालांकि, दोपहर में तेज धूप रही। साथ ही गर्मी और उमस से लोग परेशान होते रहे। शाम को फिर से बादल छा गए। मौसम विभाग ने अगले तीन दिन बारिश का अलर्ट जारी किया है। इस दौरान 30 से 40 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से धूल भरी हवा चल सकती है। आज रविवार को भी जिले में बारिश एक आसार है।

मौसम विभाग का कहना है कि वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) ट्रफ लाइन और साइक्लोनिक सर्कुलेशन की वजह से ऐसा ही मौसम रहेगा। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया, पश्चिमी विक्षोभ, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन गुजरने की वजह से प्रदेश में आंधी और बारिश का दौर चल रहा है। वहीं, कुछ जिलों में गर्मी का असर भी है। ऐसा ही मौसम आगामी दिनों में भी बना रहेगा। उधर, मानसून लगातार अपनी गति से आगे बढ रहा है। ऐसे में इसके समय से पहले मध्यप्रदेश पहुंचने की संभावना बनी हुई है।

विचार-मंथन

समायोजन और मांग बनेगा बड़ा मुद्दा

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी को अपने गठबंधन का नेता चुन लिया है। इसके साथ ही लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभालने की दिशा में उन्होंने एक और कदम आगे बढ़ा दिया। दरअसल, इस बार के आम चुनाव में खंडित जनादेश मिला है। किसी भी राजनीतिक दल को पूर्ण बहुमत हासिल नहीं हो सका है। सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों ने गठबंधन करके चुनाव लड़ा था। भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन, राजग, को जरूरी बहुमत से कुछ अधिक सीटें प्राप्त हुई हैं, इसलिए वह सरकार बनाने का दावा पेश करने जा रहा है। चूंकि भाजपा सबसे बड़ी पार्टी है, और उसके गठबंधन के पास अस्पष्ट बहुमत है, इसलिए सरकार बनाने का दावा वाजिब है। कांग्रेस की अगुआई वाले इंडिया गठबंधन ने सरकार बनाने के सवाल पर संकेत दिया है कि फिलहाल वे किसी जोड़-तोड़ में नहीं जुटेंगे और सही समय का इंतजार करेंगे। इससे पहले खबरें आई थीं कि नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू शायद सैद्धांतिक आधार पर राजग के साथ जाने से इनकार कर दें और इसका फायदा इंडिया उठा ले। लेकिन भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन की सरकार बनने की राह स्पष्ट हो गई है। पर यह भी तय है कि इस बार भाजपा का गठबंधन के सहयोगियों के साथ वही व्यवहार नहीं रह पाएगा, जो पहले की दो सरकारों के समय देखा गया। इस बार भाजपा को अकेले दम पर बहुमत हासिल नहीं है। उसे सरकार चलाने के लिए हर समय सहयोगी दलों पर निर्भर रहना पड़ेगा। पिछली दो सरकारों के समय भाजपा के पास स्पष्ट बहुमत था, इसलिए उसे इस बात की चिंता नहीं थी कि सहयोगी दल किसी मोड़ पर उसकी बांह मरोड़ सकते हैं। इस बार वैसी निश्चिंतता नहीं रहेगी। एक तनी हुई रस्सी पर संतुलन साधते हुए चलने जैसा होगा। जरा-सा भी असंतुलन खतरनाक साबित होगा। फिर, जिन दो दलों- तेलगु देसम पार्टी और जद (एकी) के पास सरकार चलाने के लिए निर्णायक सीटें हैं, उनके साथ संतुलन साधना सबसे अहम होगा। इन दोनों दलों के नेताओं यानी नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के भाजपा के साथ सैद्धांतिक मतभेद पहले कई बार उजागर हो चुके हैं। वे बीच में भाजपा का साथ छोड़ कर अलग राह पकड़ चुके हैं। इसलिए उन्हें लेकर भरोसेमंद दावा कोई नहीं कर सकता। वे कब किस फैसले से नाराज हो जाएं, कहना मुश्किल है। ऐसे में भाजपा के लिए उनके साथ लगातार संतुलन साधते रहना होगा।राजग की पिछली दो सरकारों के कामकाज के तरीके और फैसलों को लेकर अनेक आपत्तियां उठती रही हैं। नई सरकार में घटक दलों की बात सुनना जरूरी होगा। अपेक्षा की जाती है कि इस बार मंत्रिमंडल का गठन कुछ इस तरह से होगा कि उसमें घटक दलों की मांगों को समायोजित करना होगा। हर सहयोगी दल अपने समर्थन की बड़ी कीमत मांगेगा। उसमें अगर पदों और विभागों के बंटवारे में असंतुलन होगा, तो असंतोष भी उभरेगा और उसका असर सरकार के कामकाज पर नजर आने लगेगा। पिछली सरकारों के समय कई महत्वाकांक्षी योजनाओं की घोषणाएं की गई थीं, वे तभी लागू होंगी और गति पा सकेंगी, जब विभागों के बंटवारे में संतुलन होगा। फिर, हर सहयोगी दल की अपनी क्षेत्रीय प्राथमिकताएं भी हैं, वे उन्हें ऊपर रखना चाहेंगे, इसलिए नई सरकार से हर स्तर पर संतुलन साधने की दरकार होगी।

नीतीश और नायडू की कठपुतली सरकार बनेगी

अजय सेतिया

भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय में जीत का जश्न थोड़ा फीका था। भाजपा दफ्तर पहुंचे दिल्ली के भाजपा कार्यकर्ताओं के चेहरों पर वैसी खुशी नहीं थी, जैसी सातों सीटें जीतने के बाद होनी चाहिए थी। भाजपा ने दिल्ली तो जीत ली, लेकिन देश हारते हारते बची। दस साल तक अपने बहुमत के बाद पहली बार नरेंद्र मोदी एक मजबूर प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। नरेंद्र मोदी के चेहरे पर भी वह चमक नहीं थी, जो हर जीत के बाद भाजपा दफ्तर पहुंचने पर दिखती थी। लेकिन नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में सिर्फ अपने कार्यकर्ताओं और देश को ही स्पष्ट संदेश नहीं दिया, बल्कि अंतरराष्ट्रीय ताकतों को भी सख्त संदेश दिया। जहां देश के सामने मोदी ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया, वहीं अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी संदेश दिया कि दुनिया में भारत की आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक स्थिति को मजबूत करने की उनकी मुहिम में किसी रुकावट को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बिटविन द लाइन्स उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय ताकतों ने भारत की बढ़ती ताकत के प्रभाव को रोकने के लिए उन्हें हराने की कोई कोर कसर नहीं छोड़ी, लेकिन वे अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके, और अब भारत को विकसित बनाने के रास्ते में उनकी बाधाओं का भारत डट कर मुकाबला करने को तैयार है। नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग जारी रखने का संदेश देकर यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी सरकार कितनी भी मजबूर हो, भ्रष्टाचार के मुद्दे पर कोई समझौता नहीं करेगी, अरविन्द केजरीवाल, अखिलेश यादव और ममता बनर्जी को यह साफ़ संदेश है। यह संयोग है कि मोदी की सरकार जिन बैसाखियों के सहारे चलेगी, वे दोनों ही बैसाखियां अनुभवी राजनीतिज्ञों की हैं। नीतीश कुमार बिहार के सबसे लंबे कार्यकाल के मुख्यमंत्री हैं, और चंद्रबाबू नायडू चौथी बार मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। दस साल भाजपा का स्पष्ट बहुमत होने के कारण नरेंद्र मोदी को कोई पूछने वाला नहीं था, कोई टोकने वाला नहीं था, लेकिन अब कोई भी क़ानून, कोई भी नीति, कोई भी योजना चंद्रबाबू नायडू और नीतीश की सहमति के बिना नहीं चल सकती। संयोग से दोनों ही राजनीतिज्ञ बेदाग़ हैं, पन्द्रह बीस साल प्रशासन के मुखिया की भूमिका निभाने के बावजूद भ्रष्टाचार का कोई आरोप उन दोनों पर नहीं लगा कि जो उन पर चिपक सकता। जगन मोहन रेड्डी ने स्किल डिवेलपमेंट घोटाले में चन्द्र बाबू नायडू को गिरफ्तार जरुर किया था, वह छह महीने जेल में भी रहे, लेकिन आरोप उन पर चिपका नहीं। लेकिन दोनों ही पल्टू राम के तौर पर मशहूर हैं। चंद्रबाबू नायडू 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले एनडीए छोड़कर कांग्रेस के साथ चले गए थे। नीतीश कुमार ने नरेंद्र मोदी के आने के बाद दो बार पलटी मारी है। पहले वह नरेंद्र मोदी को पीएम प्रोजेक्ट किए जाने के खिलाफ 2013 में एनडीए छोड़ गए थे, 2017 में एनडीए में लौटे तो 2019 का लोकसभा और 2020 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ने के बाद 2022 में एनडीए छोड़ गए थे। नीतीश कुमार जून 2023 में नरेंद्र मोदी के खिलाफ इंडी एलायंस के आर्किटेक्ट थे। 23 जून इंडी एलायंस की पहली बैठक के आयोजक भी वही थे। तब माना जा रहा था कि विपक्षी एकता करवाने में कामयाब रहे नीतीश कुमार को इंडी एलायंस का कन्वीनर बनाया जाएगा और बाद में उन्हें ही प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाएगा। उन्हें कन्वीनर बनाए जाने या प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाए जाने में कांग्रेस बड़ी बाधा बन गई थी, तो वह लौट कर एनडीए में आ गए। क्योंकि दोनों पल्टू राम रहे हैं, इसलिए इन दोनों पर सवाल उठ रहे हैं कि वे किसकी सरकार बनवाएंगे। चुनाव नतीजों के बाद ही खबर आई कि शरद पवार ने दोनों से संपर्क साधा है, हालांकि बाद में शरद पवार ने खंडन किया। लेकिन राजनीति में कुछ भी संभव है। जो भी सरकार बने वह नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की कठपुतली होगी, क्योंकि अठारहवीं लोकसभा का सत्ता संतुलन इन दोनों के पास है। सवाल यह है कि अगर वे दोनों मोदी की सरकार बनवाएंगे, तो क्या उन्हें पांच साल प्रधानमंत्री बने रहने देंगे। अगर वे इंडी एलायंस की सरकार बनवाएंगे, तो क्या इंडी एलायंस की सरकार स्थिर रह सकती है। सरकार कोई भी बने, इन दोनों नेताओं पर निर्भर रहेगी। 1989 से लेकर 2014 तक रही अस्थिरता की राजनीति लौट आई है। कहने को वाजपेयी ने अपनी दूसरी टर्म और मनमोहन सिंह ने अपनी दोनों टर्म पूरी की, लेकिन दोनों मजबूरी की सरकारें थीं, और दोनों को कई समझौते करने पड़े थे। 2024 के चुनाव नतीजों के बाद उसी युग की वापसी हो गई है। 1998 में भाजपा के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ने के बावजूद तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जे जयललिता ने अटल बिहारी वाजपेयी को समर्थन की चिट्ठी नहीं दी थी। 16 फरवरी को चुनाव नतीजे आए थे, और एक महीने तक वाजपेयी अपने ही सहयोगी दल से समर्थन की चिट्ठी हासिल नहीं कर पाए थे। 15 मार्च 1998 की सुबह अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रपति के. आर. नारायण को कहने जा रहे थे कि उनके पास सिर्फ 237 सांसदों का समर्थन है, वह सरकार बनाने का न्योता देना चाहते हैं, तो दें, नहीं देना चाहते, तो न दें। तभी जयललिता ने अन्नाद्रमुक और अपनी सहयोगी पार्टियों के 27 सांसदों के समर्थन की चिठ्ठियां भिजवा दीं। तब भी 543 के सदन में वाजपेयी को 264 सांसदों का समर्थन हासिल हुआ था। चंद्रबाबू नायडू तब भी आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और 1996 से 1998 तक कांग्रेस के समर्थन से चली संयुक्त मोर्चा सरकार के संयोजक थे, उनकी तेलुगु देशम पार्टी लोकसभा की 12 सीटें जीती थी। उन्होंने वाजपेयी को समर्थन नहीं दिया था। राष्ट्रपति के. आर. नारायण ने खुद उन्हें फोन करके पूछा, तो उन्होंने कहा था कि सदन में वाजपेयी विश्वास मत पेश करेंगे, तो वह तटस्थ रहेंगे।

इच्छाएं पूरी नहीं हो पाने पर बढ़ रही है निराशा

मुनीष भाटिया

वर्तमान का महत्व समझना और उसे सही ढंग से जीना हमारे भविष्य को सुनहरा बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। ईमानदारी से सर्वोत्तम देने की कोशिश हमें अपने लक्ष्यों की दिशा में साहस और प्रेरणा प्रदान करती है। सपनों को अपना मार्गदर्शक बनाने के लिए उन्हें जीवन जीने का प्रेरणा स्रोत बनाना चाहिए, न कि तनाव का कारण। सपनों का सही तरीके से अपनी क्षमता के अनुसार पूरा करने का प्रयास करना हमें उत्साह, उम्मीद और सकारात्मकता की ओर ले जाता है। महत्वाकांक्षा का होना अहम है, लेकिन उसे संतुलित बनाए रखना भी आवश्यक है। हमें अपनी महत्वाकांक्षाओं को वास्तविकता के साथ मेल बना कर रखना और उन्हें पूरा करने के लिए उचित कदम उठाने की कोशिश करनी चाहिए। जीवन में स्वप्न देखना जरूरी है और यही जरूरत महत्वाकांक्षा को जन्म देती है। इसलिए सपनों को पूरा करने की खातिर सार्थक प्रयास की दिशा में परिवार और समाज को प्रेरित करना चाहिए, ताकि निराशा का फिर जिंदगी में स्थान न रहे। आजकल मनुष्य अपने सपनों और महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर अपने आसपास के लोगों को निवेश के रूप में देख रहा है। अपनी उम्मीदों को पूरा करने के लिए दूसरे के सपनों को पूरा कर पाने की क्षमता को भूल जाता है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में युवा वर्ग में बढ़ रहे अवसाद की प्रवृत्ति समाज के लिए चिंता का विषय बनी हुई है, जिसके लिए जिम्मेदार समाज की इस शक्ति के प्रति बुने गए विशाल सपनों का मायाजाल ही है। कहीं पाठ्यक्रम का मानसिक दबाव, तो कहीं प्रतियोगी परीक्षा में बार-बार मेहनत करने के बावजूद मनोवांछित सफलता न प्राप्त करना और सपनों के पूरा न होने के फलस्वरूप हताशा को जन्म दे रहा है। युवा वर्ग के बढ़ते अवसाद का मुख्य कारण व्यापक रूप से विभिन्न प्रकार के प्रतिस्पर्धात्मक दबाव हैं। इसमें पाठ्यक्रम का भार, परिवार और समाज से आशा की भारी अपेक्षाएं और सामाजिक मानकों के लिए अधिकारिक दबाव शामिल होते हैं। पाठ्यक्रम के भार के साथ विद्यार्थियों को निरंतर समाज और परिवार के सपनों के दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। दूसरों की महत्वाकांक्षाओं को पूरा न कर पाने की स्थिति में और बार-बार विफलता के दौरान युवा वर्ग को अवसाद का सामना करना पड़ता है। यह विफलता उनके स्वाभाविक संघर्ष को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है और उन्हें निराशा में डाल सकती है। अभिभावक वर्ग जो अनावश्यक अपेक्षाएं अपने बच्चों से करने लगते हैं, वह किशोर मन पर मानसिक दबाव डालने का काम करता है। जब वह युवा इन अपेक्षाओं के समक्ष खुद को कमतर पाता है, तो वह अंदर ही अंदर घुटन महसूस करने लगता है। यह बात तो सच है कि बच्चे में जितनी क्षमता होगी, वह उतना ही श्रेष्ठ दे पाता है। फिर भी अभिभावक वर्ग अनावश्यक अपेक्षाओं के कारण अपनी संतान के मन को कुंठित कर रहे हैं। आत्महत्या करने वाले के मनोभाव को न पढ़ पाने के कारण ही आत्महत्या के मामलों में भी उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हो रही है। इसलिए यह परिवार की जिम्मेदारी हो जाती है कि अनावश्यक अपेक्षाएं अपनी संतान के प्रति न रखें और उसे पढ़ने के लिए उसकी रुचि के अनुसार ही विषय चयन करने में सहयोग दें, क्योंकि कई बार अभिभावक अपनी संतान की रुचि के विपरीत संकाय में अपने बच्चों का जबरन प्रवेश करवा देते हैं, जहां न तो उसका मन लगता है और न ही वह अपनी क्षमता के अनुसार अपना सर्वश्रेष्ठ दे पाता है। नतीजतन, बुझे मन से की गई पढ़ाई और परीक्षा में वह पिछड़ने लगता है, जो अवसाद का कारण बनता है। माता-पिता को अपने बच्चों की रुचि और प्राथमिकताओं को समझना महत्वपूर्ण है। बिना उनकी रुचि को ध्यान में रखे, सपनों का बोझ डालना उन्हें मानसिक दबाव में डाल सकता है। कभी-कभी मानसिक दबाव के चलते बच्चे अपने माता-पिता के सपनों को पूरा नहीं कर पाते हैं और गलत कदम उठा लेते हैं। इसलिए संवेदनशीलता और सहानुभूति से एक-दूसरे को समझने की आवश्यकता होती है। मनुष्य की उम्मीदें अक्सर असीमित होती हैं और वह अपने प्रयासों से अधिक करने की क्षमता रखता है। यही उम्मीद उसे अपने सपनों की ऊंचाई तक पहुंचने की शक्ति प्रदान करती है। सपनों की ऊंचाई तो आकाश से भी ऊंची होती है। कई बार लोग आसानी से अपनी उम्मीदें दूसरों के ऊपर रखते हैं।

लोकसभा चुनाव के नतीजे, जनता ने दिया सरप्राइज

पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के पास इतनी भी सीटें नहीं थीं कि वह सदन में विपक्ष का आधिकारिक दर्जा हासिल कर सके। लेकिन, कांग्रेस ने वापसी कर जाहिर कर दिया कि देश में भाजपा को टक्कर देनी है तो उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। एग्जिट पोल के अनुमानों के बाद आए लोकसभा चुनाव के नतीजों ने जरूर कई लोगों को चौंकाया होगा। नतीजों ने बताया कि राजनीतिक पंडित कितने भी गुणा-गणित और विश्लेषण कर लें, कई बार वे जनता का मूड भांपने में गलती कर जाते है। इनमें भी सबसे अधिक हैरान किया 80 सीटों वाले यूपी ने। 2014 और 2019 में भाजपा को केंद्र की सत्ता तक पहुंचाने में इस राज्य ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। इस बार यहां भाजपा और इंडिया गठबंधन. में करीब-करीब बराबरी का मुकाबला दिखा, जिसकी उम्मीद शायद ही किसी को थी। बिहार, कर्नाटक और बंगाल में भी बीजेपी को नुकसान उठाना पड़ा। इनमें से बिहार और कर्नाटक में पार्टी ने पिछले चुनावों में बहुत ही शानदार प्रदर्शन किया था। इन चुनावों में कई रीजनल पार्टियों का प्रदर्शन अच्छा रहा है। इसी तरह एनडीए के घटक दलों को भी नई ऑक्सिजन मिली है। उनकी बारगेनिंग पावर बढ़ गई है। एग्जिट पोल्स में अकेले भाजपा को पूर्ण बहुमत मिलता दिखाया गया था। अगर ऐसा होता तो नरेंद्र मोदी भारतीय इतिहास के इकलौते राजनेता बन जाते, जिनके नेतृत्व में हर जीत पहले से बड़ी होती गई। लेकिन, चुनाव परिणाम इकतरफा नहीं रहा। एनडीए और इंडी गठबंधन. दोनों के पास जश्न मनाने के लिए कुछ न कुछ है। सीटों के लिहाज से बीजेपी को भले ही नुकसान हुआ, लेकिन लगातार तीसरी बार वह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। ओडिशा और तेलंगाना में पार्टी ने प्रदर्शन से सबको सरप्राइज किया। ओडिशा में लोकसभा ही नहीं, विधानसभा में भी पार्टी ने बीजू जनता दल का 24 साल से चला आ रहा वर्चस्व तोड़ा। वहीं, गुजरात और मध्य प्रदेश भाजपा के गढ़ बने हुए हैं, जबकि देश की सियासत में अब भी ब्रैंड मोदी सबसे बड़ा है। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के पास इतनी भी सीटें नहीं थी कि वह सदन में विपक्ष का आधिकारिक दर्जा हासिल कर सके। लेकिन, कांग्रेस ने वापसी कर जाहिर कर दिया कि देश में भाजपा को टक्कर देनी है तो उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इस चुनाव में कांग्रेस ने कई जगह गठबंधन में छोटे भाई की भूमिका निभाई। लेकिन, इंडिया गठबंधन. को जितनी सीटें मिलीं, उससे पार्टी का कद जरूर बढ़ेगा। शरद पवार का राजनीतिक वारिस कौन और असली शिवसेना किसकी? क्या माया और ममता अब भी ताकतवर हैं? यह चुनाव ऐसे ही कई सवालों के साथ शुरू हुआ था। इनमें से कुछ के जवाब मिल गए हैं और कुछ के बाकी हैं। जिस तरह के नतीजे आए हैं, उससे यह संदेह भी पैदा हुआ है कि क्या देश में आर्थिक सुधार जारी रहेंगे? नीतिगत स्थिरता का क्या होगा? शायद इसी संदेह की वजह से शेयर बाजार में भारी गिरावट आई। आशा है कि इन सवालों का जवाब आने वाले कुछ दिनों में मिल जाएगा, लेकिन नतीजों से यह भी तय है कि देश की राजनीति ने एक करवट ले ली है।

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5260

6			4	2				
8		4	9				7	3
3						4	5	
			8	7			9	
	8						2	
	3			6	1			
	2	5						7
9	6				5	8		2
				3	9			4

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5259

3	5	8	9	1	6	2	4	7
4	6	2	7	5	3	1	9	8
1	9	7	4	8	2	5	3	6
8	4	9	1	6	7	3	5	2
7	1	5	2	3	4	8	6	9
2	3	6	8	9	5	4	7	1
9	2	3	5	7	1	6	8	4
5	8	1	6	4	9	7	2	3
6	7	4	3	2	8	9	1	5

वर्ग पहेली 5260

संकेत: बाएं से दाएं
1. मैक्सिको की करीना योन्स डिलोन को इस महल की मिस वर्ल्ड चुनी गईं। चीन के इस शहर में पिछली वर्ष की विजेता मानुषी छिल्लर ने करीना को मिस वर्ल्ड 2018 का ताज पहनाया (2)
3. जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध काव्य (4)
6. दया करने योग्य (4)
8. माता का वह दुलार जो उसकी संतान पर होता है (3)
10. मनोहर, देखने में सुंदर (4)
11. वाद्य, बाजा (2)
12. तौल की एक सूक्ष्म इकाई जो आठ रत्ती के बराबर होती है (2)
13. पकाकर किया हुआ गन्ने का रस (2)
15. वियोग, अभाव, अविद्यमानता (3)
16. अभिभावक, संरक्षक (5)
19. अरविंद, अंबुज, राजीव (3)
20. एक प्रसिद्ध दार्शनिक जो ओशो के नाम से प्रसिद्ध हुए (4)
23. अभिलाषा, मनोरथ, इच्छा (1)

ऊपर से नीचे
1. आदर सहित, आदरपूर्वक, इज्जत से (3)
2. इंसाफ, फैसला, जजमेंट (2)
3. स्थिर, मौजूद, ठहरा हुआ (3)
4. हिंदी व्याकरण में एक अलंकार जिसमें एक शब्द की अनेक बार आवृत्ति होने पर भी सबका विभिन्न अर्थ होता है (3)
5. इस काढ़ने वृक्ष की छाल औषधि के निर्माण में प्रयुक्त होती है (2)
7. एक प्रसिद्ध कवि जो फिल्मी गीतकार भी थे (3)
9. अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने वाला (4)
11. इस नदी के तट पर अहमदाबाद और गांधी नगर जैसे प्रमुख शहर बसे हैं (5)
12. रेडियो के आविष्कारक (4)
13. हास्य रसप्रधान रूपक को यह भी कहा जाता है (3)
14. जानवरों के नख, खुर (2)
17. क्षण, लम्हा, समय का छोटा विभाग (2)
18. हैमिंग्टन, लेबल, पता (2)
21. पंच तत्वों में से एक, पानी, वारि (2)
22. चंद्रमा, मयंक, रजनीपति (2)

वर्ग पहेली 5259 का हल

स	व		श्री	स		सु	धा
ता	न	टो	न		बी	ध	क
ना	ना		रू	ब	ल		या
		क	म	ल	ना	ल	
त	ला	श		भ		ल	य
ख	मा		भ	ह	ता		म
शि		रा	य		म	ह	क
ला	वा		वा	या		रस	

आज का राशिफल

मेष [illegible]

वृषभ [illegible]

मिथुन [illegible]

कर्क [illegible]

सिंह [illegible]

कन्या [illegible]

तुला [illegible]

वृश्चिक [illegible]

धनु [illegible]

मकर [illegible]

कुंभ [illegible]

मीन [illegible]

विद्या भारती की अभा साधारण सभा बैठक का शुभारंभ

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की साधारण सभा बैठक का शुभारंभ आज संजीत मार्ग स्थित सरस्वती विहार परिसर में हुआ इसके उद्घाटन के अवसर पर शुद्धाद्वैत पुष्टिमार्ग के गोस्वामी श्री दिव्येश कुमार जी महाराज तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉक्टर कृष्ण गोपाल जी

अखिल भारतीय महामंत्री श्री अवनीश जी भटनागर उपस्थित थे। इस तीन दिवसीय बैठक में देश के सभी प्रांतों से 300 से अधिक पदाधिकारी भाग ले रहे हैं। दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना तथा अतिथियों के परिचय एवं स्वागत के पश्चात संस्थान के महामंत्री श्री अवनीश जी भटनागर ने पिछले वर्ष 2023-24 का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में 114 नए जिलों में विद्या भारती का कार्य प्रारंभ होकर 642 जिले कार्ययुक्त हो गए हैं। इस अवसर पर संस्कृति ज्ञान परीक्षा जो की हिन्दी एवं अंग्रेजी के अतिरिक्त 10 भारतीय भाषाओं में आयोजित की जाती है, तथा जिसमें देश भर में 20 लाख से अधिक विद्यार्थी तथा 2.5 लाख से अधिक शिक्षक एवं पालक सम्मिलित होते हैं इस परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित कक्षा तृतीय से द्वादश तक संस्कृति बोधमाला पुस्तकों का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। वर्तमान में कुल 12098 औपचारिक विद्यालय तथा 8465 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों अर्थात कुल 20563 विद्यालयों के माध्यम से 33 लाख 25 हजार 513 छात्रों को संस्कारयुक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है। श्री भटनागर ने इस वर्ष के प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रमों, अखिल भारतीय स्तर के खेलकूद समारोह, विज्ञान मेला, गणित मेला तथा संस्कृति महोत्सव की जानकारी प्रस्तुत की तथा विद्या भारती के विद्यार्थियों द्वारा पिछले वर्ष तथा इस वर्ष के बोर्ड परीक्षा परिणामो में मेधावी छात्र सूची में स्थान पाने तथा सिविल सेवा परीक्षाओं में सफल रहे पूर्व छात्रों की संख्या का उत्साहजनक आंकड़ा प्रस्तुत किया।

दिन भर चली चर्चा में विद्या भारती के कार्य के भौगोलिक विस्तार तथा गुणवत्ता विकास के कार्यों की उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा झड़डतथा वीडियो के माध्यम से प्रस्तुति की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत घोषित बाल्यावस्था की शिक्षा तथा सेकेंडरी शिक्षा की पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में विद्या भारती के विद्यालयों की स्थिति की प्रांतश: समीक्षा की गई तथा आगामी वर्षों की कार्ययोजना का विचार किया गया। इसके अलावा जनजातीय क्षेत्र तथा सेवा क्षेत्र की शिक्षा, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यालयों में होने वाले शारीरिक तथा योग शिक्षा पाठ्यक्रमों आदि के संबंध में भी निर्धारित बिंदुओं के आधार पर समीक्षा की गई विद्यालयों में कौशल विकास की गतिविधियों की स्थिति तथा आगामी कार्यक्रमों के विषय में भी योजना बनाई गई। आज प्रारंभ हुई यह बैठक 10 जून 2024 तक चलेगी जिसमें अनेक शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विषयों पर विद्या भारती की भूमिका पर चिंतन कर आगामी वर्ष के लिए कार्यक्रम एवं लक्ष्य का निर्धारण किया जाएगा।

अभिनंदन के संयम विहार कॉलोनी में नियमों के विपरीत मोबाईल टावर निर्माण मामले में...

क्षेत्र के रहवासियों ने लोक अदालत में याचिका प्रस्तुत की

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नगर की नवनिर्मित संयम विहार कॉलोनी अभिनंदन नगर मंदसौर में मोबाईल टावर का निर्माण विगत दिनों प्रारंभ हुआ था जिसका वहां के रहवासियों ने विरोध कर भारी आक्रोश व्यक्त किया था। मौके पर नगर पालिका के अधिकारियों ने भी पहुंचकर कार्य को रूकवाया था। रहवासियों ने कलेक्टर के साथ नगर पालिका अध्यक्ष एवं नगर पालिका सी एम ओ को ज्ञापन देकर कार्यवाही की मांग की थी लेकिन पुन: 7 जून को कार्य शुरू होने की सूचना पर क्षेत्र के नागरिकों ने मन्दसौर विधायक विपिन जैन, पूर्व विधायक यशपालसिंह सिसौदिया, नगर पालिका अध्यक्ष रमा देवी गुर्जर एवं कलेक्टर मंदसौर तथा सी एम ओ नगर पालिका मन्दसौर को ज्ञापन दिया गया था। ठोस कार्यवाही नहीं होने पर क्षेत्र के रहवासियों के 6 प्रतिनिधियों विनोद मेहता, रमेश जैन, मोतीसिंह रावत, अशोक जैन, शक्ति जैन, जितेंद्रसिंह चौहान ने अपने अभिभाषक डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर के माध्यम से न्यायालय श्रीमान लोकोपयोगी सेवाओं की स्थाई लोक अदालत के न्यायधीश के समक्ष एक प्रार्थना पत्र (याचिका) अंतर्गत विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 अध्याय 6 ए प्रस्तुत कर कार्यवाही का निवेदन किया गया है। याचिकाकर्तागण के अभिभाषक डॉ राघवेन्द्रसिंह तोमर ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि याचिका में कलेक्टर मन्दसौर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी मन्दसौर, प्रबंधक इंडस मोबाईल टावर लिमिटेड एवं मकान मालिक कैलाशबाई पाटीदार को विपक्षी पक्षकार बनाया गया है। याचिका में निवेदन किया गया है कि नियमों के विपरीत आवासीय प्रयोजन की अनुमति से बने मकान में व्यवसायिक प्रयोजन हेतु मोबाईल टावर का निर्माण किया जा रहा है जो अवैधानिक है। इस संबंध में क्षेत्र के नागरिकों के आक्रोश एवं विरोध के बाबजूद जिम्मेदारों द्वारा कोई कार्यवाही नहीं होने पर माननीय न्यायालय की शरण ली गई है। अभिभाषक डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर ने बताया कि गाईड लाइन के अनुसार टावर निर्माण स्थल के 100 मीटर परिधि में कोई शिक्षण संस्थान या हॉस्पिटल नहीं होना चाहिए जबकि उपरोक्त टावर निर्माण स्थल के 100 मीटर की परिधि में चार शिक्षण संस्थान है जिनमें लगभग 800 से 900 बच्चे अध्ययन करने आते है। साथ ही टावर निर्माण स्थल के आस पास के रहवासियों के सहमति पत्र भी होना अनिवार्य है अगर विरोध होता है तो नियमानुसार टावर नहीं लगाया जा सकता। माननीय न्यायालय में प्रस्तुत याचिका पर विपक्षीगण को नोटिस जारी होंगे जिस पर उन्हें अपने जवाब प्रस्तुत करने होंगे।

जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवन हेतु विशेष अभियान

नारायणगढ़, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। स्थानीय निकाय के नगर परिषद में शासन से प्राप्त निर्देशानुसार निकाय में जल स्रोतों तथा नदी, तालाब, बावड़ी तथा अन्य जल स्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवन हेतु 5 जून से 16 जून तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। प्राप्त निर्देशानुसार निकाय के द्वारा विशेष जल सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें सर्वसहमति से कार्ययोजना बनाई गई। कार्ययोजना अनुसार आज तालाब की पाल पर विशेष सफाई अभियान चलाया जाकर तालाब के आसपास सफाई करवायी गई। उसके बाद शासकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय पर जल संरक्षण विषय पर निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्थानीय छात्र-छात्राओं ने बढ चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम मे नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती ममता कुँवर चौहान, उपाध्यक्ष वीरेंद्र रूपरा, वार्ड क्रमांक 09 पार्षद प्रीति खिंचावत, वार्ड क्रमांक 10 पार्षद पुष्पा मुंदडा, वार्ड क्रमांक 15 पार्षद दशरथ भास्कर सहित अन्य जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ता, मुख्य नगर पालिका अधिकारी महोदय प्रमोद जैन, शासकीय विद्यालय प्राचार्य महोदय, शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं, स्थानीय नागरिकों, एवं निकाय कर्मचारी उपस्थित थे।

विजय गुर्जर का जन्मदिन प्रेम और स्नेह के साथ मनाया

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। 7 जून को नगरपालिका के पूर्व पार्षद, प्रदेश भाजपा किसान मोर्चा कार्यसमिति सदस्य, लोकप्रिय नेता विजय गुर्जर का जन्मदिन मंदसौर शहर में अपार प्रेम और स्नेह के साथ स्नेहीजनों, कार्यकर्ताओं मित्रगण, नागरिकों, शुभचिंतकों द्वारा उमंग और उत्साह के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर अलग-अलग स्थान पर केक काटकर और पुष्प माला पहनाकर व साथी गौशाला में गायों को चारा खिलाकर श्री गुर्जर का जन्मदिवस मनाया गया। अनेक शुभचिंतकों ने दूरभाष पर भी दूर-दूर से शुभकामनाएं प्रेषित की। विजय गुर्जर ने अपने जन्मदिन पर कहा कि एनडीए गठबंधन की श्री नरेंद्र मोदी की तीसरी बार सरकार बनने से जन्मदिन की खुशी चार गुना हो गई है। अलग-अलग स्थान पर जन्मदिन का आयोजन प्रदीप क्वीश्वर, रोहित श्रीवास्तव, महेश मोदी, रितेश तिवारी, पुष्पा चौहान, पूजा चौहान, अनिल शर्मा, हरीश राठौर, बलवंत बल्लू ग्वाला, राकेश चौधरी, ललित मखीजा, मलिक मेहर, दीपक दीक्षित, विनय हुपेले, शैलेंद्र सिंह राठौड़, मनीष शर्मा, अश्विन तिवारी, राम बिरला, मनोज टेलर, हितेश रामावत, दिनेश बैरागी, धर्मेंद्र पाठक, विजय सिंह राठौड़, निलेश जोशी, राकेश भाटी, अमित मारवाड़ी, मनीष भावसार, राजेंद्र मेहरा, नितिन गोड, दुर्गेश पवार, सुरेश बैरागी, अमरीश निमा, कमलेश कच्छावा, अंकित मादलीया, जगदीश माली, उज्वल सक्सेना सहित शहर के अनेक गण मान्य नागरिकों शुभचिंतकों ने उपस्थित होकर बधाई और शुभकामनाएं दी।

दशोरा समाज द्वारा कुलदेवी पूजन 13 को

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। दशोरा प्रश्नोरा नागर समाज द्वारा प्रतिवर्षानुसार शिवना नदी के मध्य विराजित समाज की कुलदेवी का वार्षिक पूजन 13 जून 2024 गुरुवार को किया जावेगा। जिसके तहत प्रात: 7 बजे पशुपतिनाथ अभिषेक एवं पूजन किया जाएगा। प्रात: 8.30 बजे पशुपतिनाथ मंदिर से विशाल वाहन रैली निकलेगी जो पूजन स्थल शिवना तट, छोटी रपट के पास जावेगी। प्रात: 9 बजे नवचंडी यज्ञ, हवन पूजन, प्रात: 11.30 महाआरती पश्चात् महाप्रसादी होगी।

समाज के मीडिया प्रभारी जयेश नागर, मंदसौर एवं आनंद दशोरा, उज्जैन द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि दशोराजन पूर्व में मंदसौर में निवासरत थे। जो आक्रांताओं के आक्रमण के कारण मध्यप्रदेश के मालवा, निमाड़ एवं राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में जाकर बस गये। इस पूजन के अवसर पर मध्यपदेश के उज्जैन, इन्दौर, खण्डवा, खरगोन, धार, झाबुआ, बड़वानी, भोपाल, बुरहानपुर व राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, चंडीगढ़ से लगभग 5000 श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इस अवसर पर भगवान हाटकेश्वर पशुपतिनाथ का अभिषेक, पूजन के साथ कुलदेवी का पूजन, हवन, महाआरती, महाप्रसादी एवं समाज बंधूओं के लिये नि:शुल्क यज्ञोपवित्र संस्कार का आयोजन किया जावेगा। आने वाले श्रद्धालुओं के ठहरने एवं महाप्रसादी की व्यवस्था पशुपतिनाथ गेस्ट हाउस, पशुपतिनाथ मंदिर के पास रखी गई है। पूजन समिति के संयोजक दामोदरदास सुगंधी, उज्जैन मंदिर निर्माण ट्रस्ट अध्यक्ष श्री दिनेशचन्द्र दशोरा उज्जैन, स्वागताध्यक्ष श्री राजेश गुप्ता चंडीगढ़, एवं सह-संयोजक श्री विश्वनाथ दशोरे खण्डवा, श्री विजय गुप्ता भोपाल, श्री अवधनारायण दशोरा, खिरकिया, श्री राधेश्याम गुप्ता, सिलावद, श्री सुनिल गुप्ता ठीकरी, श्री महेश सुगंधी उज्जैन, श्री संतोष गुप्ता देवास, श्री नर्मदालाल गुप्ता बुरहानपुर, श्री पंकज सुगंधी खरगोन, श्री योगेश सुगंधी धार, श्री दिलीप गुप्ता ओणम राजपुर, सहयोगी श्री केदार दशोरे खण्डवा ने सभी समाजबंधुओं से कूलदेवी के वार्षिक पूजन कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पधारने का अनुरोध किया।

जल गंगा संवर्धन अभियान जल संरचनाओं के संरक्षण में वरदान साबित होगा-विधायक डंग

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरचनाओं के संरक्षण एवं जीणोद्धार के लिए सुवासरा में विधायक श्री हरदीप सिंह डंग ने बावड़ी की साफ सफाई करके अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि अभियान से जल संरचनाओं के संरक्षण में अभियान वरदान साबित होगा।

जीवन के लिए जल जरूरी है और जल संरक्षण के लिए वृक्ष जरूरी है, इसलिए प्रत्येक दिवस एक वृक्ष जरुर लगाएं। जल स्त्रोतों के जल संरक्षण एवं पुनर्जीवन के लिए हम सभी को एकजुट होकर कार्य करना होगा। संतान को जन्म से और नदियों को उद्गम से संभालने पर ही इनका भविष्य उज्ज्वल होगा। नदियों को उद्गम से पुनर्जीवित करने और उनके अविरल प्रवाह के लिए प्रदेश में नवाचार की शुरूआत हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान में प्रदेश में नदी, तालाबों, कुओं, बावड़ियों तथा अन्य जल स्त्रोतो के जल संरक्षण एवं पुनर्जीवन के लिये 16 जून तक विशेष अभियान संचालित किया जाएगा। हमारे लिए नदी के पानी का कण-कण पूजनीय है। हम सभी को जल स्त्रोतों को संरक्षित एवं संवर्धन करने का कार्य करना चाहिए जिससे हमारी भावी पीढ़ी को जीवन जीने की कार्यशैली सिखा सकें और हमारे पशु-पक्षी भी सुरक्षित रह सकें। हम सभी को वृक्ष लगाने का कार्य करना चाहिए किंतु पौधा रोपण वही करें जहां पानी हो, इससे हमारा पानी भी बचेगा और हमारे वृक्ष भी बड़े होंगे इसलिए पौधा रोपण स्थान और जगह देखकर ही करें। हम दिन- रात जिस तरीक़े से प्रकृति का दोहन कर रहे हैं, यह हम सबके लिए खतरनाक है। यदि हम अच्छा काम करेंगे, तो उसका लाभ हमारे बच्चों को मिलेगा। हम क्या करना चाहते हैं यह हमें तय करना पड़ेगा।

मोदी सरकार में शिवराजसिंह, वीडी शर्मा मंत्रिमंडल में होंगे शामिल

दो पुराने चेहरे हटेगें और दो नए चेहरों को मिल सकती है जगह..!

जबलपुर, 8 जून। नई सरकार में प्रधानमंत्री के रुप में नरेन्द्र मोदी फिर एक बार 9 जून को शपथ लेगें। पीएम के शपथ ग्रहण समारोह को लेकर मंत्रीमंडल के गठन को लेकर जोर-शोर से विचार मंथन किया जा रहा है। खासतौर पर एमपी को लेकर क्योंकि एमपी से ही पूरी 29 सीटों पर भाजपा ने अपना परचम लहराया है। ऐसा माना जा रहा है कि एमपी से पूर्व सीएम शिवराजसिंह चौहान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा को मंत्रीमंडल में शामिल किया जाना लगभग तय है। इसके अलावा शहडोल से सांसद बनी हिमाद्री सिंह व देवास सांसद महेन्द्रसिंह सोलंकी को भी शामिल किए जाने को लेकर चर्चा है। इसके अलावा वीरेन्द्र कुमार व फग्गनसिंह कुलस्ते को लेकर विचार विमर्श चल रहा है।

खबर है कि मंत्रीमंडल में किसको स्थान देना है किसकों नहीं यह करीब-करीब तय हो गया है। जिसके चलते एमपी से चार सांसदों को मंत्री बनाया जा सकता है, जिसमें दो कैबिनेट व दो राज्यमंत्री होगें। इसके अलावा मौजूदा मंत्रियों में सिर्फ ज्योतिरादित्य सिंधिया के नाम पर मुहर लगाई जा चुकी है। खबर यह है कि पूर्व सीएम शिवराजसिंह चौहान को कैबिनेट में जगह दी जाएगी। क्योंकि एनडीए के घटक दलों में टीडीपी व जेडीयू द्वारा कृषि व ग्रामीण विकास मंत्रालय मांग है, ऐसे में शिवराजसिंह को कौन सा मंत्रालय दिया जाएगा। शिवराजसिंह को कृषि मंत्रालय देने पर विचार पहले ही किया जा चुका था। इस बार भाजपा बहुमत के आंकड़े से पीछे रह गई है तो पहली बार सहयोगी दलों को मंत्रीमंडल में शामिल करना है, उनको साधने के लिए विभागों का बंटवारा बड़े सोच समझकर करना पड़ रहा है। यही कारण है कि एमपी से केंद्रीय मंत्री वीरेन्द्र कुमार व फग्गन सिंह कुलस्ते के नाम को लेकर संशय बना हुआ है। हो सकता है कि इन दोनों सांसदो को मंत्रीमंडल में जगह न मिल पाए। इनकी जगह पर शहडोल से सांसद हिमाद्री सिंह व खंडवा से सांसद महेन्द्रसिंह सोलंकी के नामों पर भी विचार विमर्श चल रहा है। जिसकी खास वजह है कि घटक दलों ने भी कई अहम मंत्रालय की मांग की है, उन्हे साधने के लिए मंत्रीमंडल से पुराने चेहरों को हटाना ही पड़ेगा। वहीं नए सांसदों को मंत्रीमडल में शामिल करने कैबिनेट मंत्री या राज्यमंत्री बनाने में कोई परेशानी भी नही आएगी। विभाग को लेकर भी किसी प्रकार का टकराव नहीं होगा। जहां तक जातीय संतुलन का सवाल है तो उसका भी पूरा पूरा ध्यान रखा जा रहा है। एमपी में करीब 22 प्रतिशत आदिवासी वर्ग को खुश रखने के लिए शहडोल से दो बार की सांसद हिमाद्री सिंह को राज्यमंत्री बनाया जा सकता है, वहीं वीरेन्द्र कुमार के स्थान पर महेन्द्रसिंह सोलंकी को जगह दी जाएगी। वे भी दूसरी बार चुनाव जीतकर आए है। क्योकि मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल सभी को खुश रखकर चलने वाला होगा, ऐसे में पहली बार संसद पहुंचने वाले सांसदों को जगह मिलने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है।

वीडी शर्मा को मिलेगी अहम जिम्मेदारी-इसके अलावा एमपी से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा को केन्द्रीय मंत्रीमंडल में जगह देने पर भी विचार विमर्श किया गया है यदि ऐसा नहीं होता है कि उन्हे राष्ट्रीय स्तर पर कोई बड़ी जिम्मेदारी देने पर भी चर्चा चल रही है। जिसका एक कारण यह भी है कि वीडी शर्मा के अध्यक्षीय कार्यकाल में एमपी में विधानसभा चुनाव में 163 सीटें जीती है। इसके अलावा लोकसभा में 29 सीटे आई है, ऐसे में वीडी शर्मा को नजर अंदाज नहीं किया जाएगा।

सार्वजनिक और शासकीय भूमि पर अधिकतम पौधरोपण कर उन्हें संरक्षित करने का प्रयास आवश्यक

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। सार्वजनिक और शासकीय भवनों में अधिकतम नीम, पीपल और बड़(वट वृक्ष) के पौधे लगा कर उन्हें संरक्षित करना आवश्यक है, कारण को ये वृक्ष 24 घण्टे ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

यह विचार प्रेस क्लब अध्यक्ष ब्रजेश जोशी ने विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में हरित क्रांति पर्यावरण समूह द्वारा आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किये। श्री जोशी ने इस अवसर पर यह भी कहा कि हमारे चेनल डेस टी. वी. का यह प्रयास होगा कि जो लोग पौधरोपण और पेड़ों के संरक्षण के लिए व्यवहारिक धरातल पर कार्य कर रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित किया जाए। इस अवसर पर बोलते हुवे संगीत महाविद्यालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष नरेंद्र त्रिवेदी ने पर्यावरण संरक्षण का कार्य केवल सरकार का नहीं इस क्षेत्र में जनभागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि जो भी साथी पौधरोपण और वृक्ष संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं उनका उत्साहवर्धन कर उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुवे सेवानिवृत्त इंजीनियर सुनील व्यास ने कहा कि धरती के बढ़ते तापक्रम को बढ़ने से रोकने के लिए अन्य उपायों के साथ अधिकतम पौधरोपण आवश्यक है, कोरोना काल मे हम ऑक्सीजन के महत्व को व्यवहारिक रूप में समझ चुके हैं उसके पश्चात भी हम नहीं जागे तो हमारी आने वाली पीढियां इस अपराध के लिए क्षमा नहीं करेंगी। समाज सेवी अज़ीज़ुल्लाह ख़ान और फ़िल्म डायरेक्टर मनी शामगढ़ वाला ने कहा कि पेड़ों को संरक्षण करने के अभियान को सामाजिक और धार्मिक अभियान के रूप में जन जन तक पहुँचाने का प्रयास आवश्यक है। युवा साथियों हमन्त कछावा और युवराज राठौर, दिनेश बसेर ने इस अभियान को सफ़ल बनाने के लिए तन, मन, धन से सहयोग का संकल्प व्यक्त किया। संचालन किया असअद अन्सारी ने और आभार दिनेश बसेर ने माना।

युवा मेघवाल समाज संगठन नीमच की बैठक आज

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मेघवाल समाज छात्रावास जिला नीमच को लेकर संगठन के पदाधिकारियों व मेघवाल समाजजनों की एक बैठक का आयोजन आज दिनांक 9 जून 2024 रविवार को प्रात: 11 बजे नीलकंठ महादेव मंदिर पर रखी गई है। अत: युवा मेघवाल समाज संगठन मप्र के समस्त पदाधिकारीगण एवं समस्त मेघवाल समाज नीमच अधिक से अधिक संख्या में बैठक में पधारकर बैठक को सफल बनाने का कष्ट करें। उक्त जानकारी दशरथ चौरड़िया कोषाध्यक्ष द्वारा दी गई.।

नीट परीक्षा में मीनल पटेल ने मंदसौर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। एन.टी.ए. द्वारा आयोजित नीट-2024 परीक्षा में मंदसौर की होनहार बिटिया मीनल पटेल पिता बी.एल. पाटीदार (पटेल) ने मंदसौर जिले में प्रथम व प्रदेश में उत्कृष्ट रैंक प्राप्त कर मंदसौर जिले का गौरव बढ़ाया है।

मीनल पटेल की इस उपलब्धि पर स्नेहीजनों, इष्टमित्रों व परिवारजनों ने उनके निवास स्थल पर पहुंचकर बधाईयां प्रेषित की व उसके उज्वल भविष्य की कामना की। बधाई देने वालों में भारत पेंशनर्स समाज अध्यक्ष अशोक शर्मा, भारतीय शिक्षण मण्डल संयोजक श्यामसुंदर देशमुख, पेंशनर्स संघ प्रमुख सतीश नागर, संस्कृत भारती जिला संयोजक दिनेश पालीवाल, पूर्व प्राचार्य सुरेन्द्र रामावत, पत्रकार एवं पूर्व पार्षद सुरेश भावसार ने बिटिया व परिवार को बधाई दी। इस अवसर पर मीनल के पिता बी.एल. पाटीदार ने बताया कि मीनल की सफलता में उसके अथक परिश्रम व प्रयास महत्वपूर्ण रहा है। साथ ही उसे प्रोत्साहित करने में परिवार के डॉ. रमेश एवं डॉ. रेखा पाटीदार तथा भाई डॉ. तुषार पटेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मीनल प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि की रही है तथा 12वी सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में 93 प्रतिशत अंक अर्जित कर चुकी है।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जिला पंचायत में पौधारोपण

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत नीमच जिले में कलेक्टर श्री दिनेश जैन के नेतृत्व एवं जिला पंचायत सीईओं श्री गुरु प्रसाद के मार्गदर्शन में सभी नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र की ग्राम पंचायत में जल संरक्षण के कार्यों के साथ-साथ वृक्षारोपण की तैयारी भी प्रारंभ हो गई है। इसी के तहत 8 जून को जिला पंचायत परिसर में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सज्जन सिह चौहान एवं जिला पंचायत सीईओं श्री गुरु प्रसाद की उपस्थिति में स्प्रींग वुड अकेडमी के एनसीसी केडेटस के सहयोग से 150 पौधे रोपने की तैयारी की गई है। इसके तहत 150 गड्ढे खोदे गए और नीम, चम्पा और आंवला के 60 पौधे भी रोपित किए गए। इस अवसर पर पीजी कालेज इचार्ज एन.सी.सी. श्री डॉ महेन्द्र शर्मा, स्प्रीगवुड स्कुल एन.सी.सी. इंचार्ज श्री कुलदीप सिह, एन.सी.सी. केडेटस व जिला पंचायत का स्टाफ भी उपस्थित रहा।

जिला प्रेस क्लब का मिलन समारोह आज रामपुरा में

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जिला प्रेस क्लब रजिस्टर्ड नीमचव रामपुरा प्रेस क्लब द्वारा 9 जून रविवार को जिला स्तरीय पत्रकारों का मिलन समारोह रामपुरा नगर में प्रात: 11:00 बजे स्थानीय विश्रामगृह परआयोजित किया जा रहा है।

मिलन समारोह में मनासा एसडीएम पवन बारिया, एसडीओ विमलेश उइकेपी, तहसीलदार मुकेश निगम, रामपुरानगर परिषद अध्यक्ष सीमा जितेंद्र जागीरदार, सीएमओ कन्हैया लाल सूर्यवंशी, थाना प्रभारी विकास पटेल, मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर प्रमोद पाटीदार, जिला प्रेस क्लब के संस्थापक अध्यक्ष राहुल जैन, जिला अध्यक्ष विष्णु मीणा के आतिथय, व जिला प्रेस क्लब सचिव राजेश लक्ष्यकार, उपाध्यक्ष राकेश मालवीय, कोषाध्यक्ष अध्यक्ष राजेश भंडारी, सहसचिव बिएलदमामी, कार्यकारिणी सदस्य भानु प्रिया बैरागी, महावीर चौधरी व सभी प्रमुख पत्रकारों की उपस्थिति में संपन्न होगा। जिला स्नेह मिलन समारोह में जिला प्रेस क्लब के आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा के साथ ही जिला कार्यकारिणी की बैठक भी आयोजित होगी जिसमें विभिन्न तहसीलों में तहसील अध्यक्षों की नियुक्तियां के संबंध में चर्चा कर नवीन नियुक्तियों की घोषणा की जाएगी। वह आगामी कार्य योजना तैयार की जाएगी। जिला प्रेस क्लब अध्यक्ष विष्णु मीणा वरामपुरा प्रेस क्लब के सदस्यों ने जिला प्रेस क्लब के सभी सदस्यों से आग्रह किया है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर मिलन समारोह के आयोजन को सफल बनाएं।

श्री पारब्रह्म देव छड़ी का मेला एवं भण्डारा कल

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। श्री पारब्रह्म देव छडी का मेला एवं भव्य भण्डारा 10 जून, सोमवार को जैन मांगलिक भवन दशरथ नगर मंदसौर पर आयोजित होगा। जिसमें सिंधी समाज की माताओं एवं बहनों द्वारा भक्ति संगीत की प्रस्तुति भी दी जाएगी।

उक्त जानकारी देते हुए पं. वासुदेव शर्मा ने बताया कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 10 जून को प्रात: 9.30 बजे निवास स्थान दशरथ नगर पानी की टंकी के पास स्थित देवस्थान पर ध्वजारोहण एवं हवन पूजन तथा शाम को 4 बजे जैन मांगलिक भवन दशरथ नगर पर महिला भक्ति संगीत तथा शाम को 7.30 बजे महाआरती होगी। तत्पश्चात् महाप्रसादी भण्डारे का आयोजन रखा गया है। मेला आयोजक पं. वासुदेव शर्मा ने सभी धर्मप्रेमी माताओं और बहनों से सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर भक्ति संगीत महाआरती एवं महाप्रसादी का लाभ लेने की अपील की है।

विहिप गौरक्षा विभाग गौ तस्करी व गौ हत्या रोकने की मांग को लेकर कल देगा ज्ञापन

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। विश्व हिन्दू परिषद/बजरंग दल गोरक्षा विभाग जिला मंदसौर द्वारा प्रदेश मे बढती गो तस्करी ओर गो हत्या को रोकने ओर गौतस्करी करने वालो के खिलाफ कडा क़ानून बनाए जाने हेतु दिनांक 10 जून, सोमवार को प्रात: 10.30 बजे सभी गौप्रेमी व सर्व हिन्दू समाजजन महाराणा प्रताप बस स्टेण्ड पर एकत्र होकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम कलेक्टर को ज्ञापन दिया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए विहिप गोरक्षा प्रमुख अमरदीप कुमावत ने सभी सनातनी गौभक्तो से आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में गौ माता के सम्मान में उपस्थित रहे।

भैरवगढ़ में खुली जैल बनकर तैयार, अब कैदी नहीं होंगे सलाखों के पीछे

उज्जैन, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। केंद्रीय जैल भैरवगढ के समीप ही खुली जेल नवजीवन आश्रम बनकर तैयार हो चुकी है। जल्द ही इसका शुभारंभ किया जाएगा। गुरुवार को जेल डीजी भी आकर दौरा कर चुके हैं। इस जैल में आजीवन कैद की सजा काट रहे 20 कैदी अपने परिवार के साथ रह सकेंगे।

लंबे समय से उज्जैन में खुली जैल बनाने की कवायद की जा रही थी। जैल मुख्यालय से अनुमति मिलने के बाद अब खुली जैल नवजीवन आश्रम बनकर पूरी तरह तैयार हो गई है। केंद्रीय जेल भैरवगढ के समीप जैल की जमीन पर बनी इस खुली जैल में 20 कैदियों की परिवार सहित रहने की व्यवस्था की गई है। इसमें आजीवन कैद की सजा काट रहे ऐसे कैदियों को रखा जाएगा जिनकी 10 साल सजा पूरी हो चुकी है और चार साल की माफी मिल चुकी है। जिन कैदियों का आचरण अच्छा हो तथा वह समय-समय पर पैरोल भी जाते रहे हो। अधिकारियों का कहना है कि जेल प्रशासन ही कैदियों को जैल से बाहर संस्थानों व प्रतिष्ठानों पर रोजगार मुहैया करवाएगा। जहां सुबह कैदी काम पर जाएंगे और शाम होते ही वापस जेल में लौट आएंगे।

गतिविधियों व सुरक्षा संबंधी जानकारी दी–जेल अधीक्षक मनोज कुमार साहू ने बताया कि गुरुवार को जेल महानिदेशक गोविंद प्रताप सिंह आकस्मिक निरीक्षण करने उज्जैन पहुंचे थे। यहां उन्होंने केंद्रीय जेल भैरवगढ का निरीक्षण किया। इसके बाद नवनिर्मित नवजीवन आश्रम खुली जेल का निरीक्षण भी करने पहुंचे। इस दौरान जेल अधीक्षक साहू ने डीजी जेल गोविंद प्रतापसिंह को जेल में संचालित सभी गतिविधियों एवं सुरक्षा से संबंधित जानकारी दी। इसके बाद डीजी जेल ने सब जेल तराना का निरीक्षण किया।

खाद्य सुरक्षा प्रशासन ने छ: संस्थानों से लिए सेम्पल

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जिला कलेक्टर के निर्देशानुसार गर्मी के मौसम में ध्यान रखते हुए, खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। 8 जून शनिवार को कार्यवाही के दौरान मंदसौर के छ: संस्थानों का निरीक्षण करते हुए गुणवत्ता स्तर की जांच वास्ते नमूने जब्त किये गये है। जिन्हें राज्य खाद्य प्रयोगशाला भोपाल भेजा गया हैं।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी बी एस जामोद ने बताया कि 8 जून शनिवार को कार्यवाही के दौरान मंदसौर के शिव शक्ति गजक एवं मटका कुल्फी से रबडी कुल्फी, कृष्णा हिंग कचैरी सेन्टर समोसे का मसाला, फैमस उज्जैन की कुल्फी सेन्टर से बादाम शेख, शंकर मसाला डोसा सेन्टर से सांभर एवं मनपसंद किराना एवं ट्रेडर्स से सरसों का तेल के नमुने लिये गये हैं। सभी खाद्य नमुनों को गुणवत्ता स्तर की जांच वास्ते खाद्य विश्लेषक राज्य खाद्य प्रयोगशाला मप्र भोपाल भेजे गये है जहां से जांच रिपोर्ट आने पर आगामी कार्रवाई की जायेगी। कार्रवाई के दौरान सभी संस्थानो को अपने यहां साफ सफाई रखने एवं पेयजल की व्यवस्था करने के निर्देश दिये गये।

तालाब गहरीकरण व पौधारोपण किया

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जनपद पंचायत सीईओ श्री आर सी हालू के मार्गदर्शन में मल्हारगढ तहसील के ग्रामों में जल संरक्षण को लेकर कार्य किया जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जन सहयोग के द्वारा तालाब गहरीकरण एवं पौधारोपण किया गया। इस दौरान ब्लॉक समन्वयक श्रीमती अर्चना भट्ट, सामाजिक कार्यकर्ता एवं ग्रामीण जन उपस्थित थे।

पागल कुत्ते ने महिलाओं सहित 7 को काटा

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में नहीं मिला एंटी रेबीज इंजेक्शन

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नगर के चोपाटी क्षेत्र में एक पागल कुत्ते ने महिलाओं सहित 7 लोगों को काटा, यहां सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में इंटी रेबीज इंजेक्शन नही होने से उन्हें मल्हारगढ अस्पताल भेजा। जानकारी के अनुसार शनिवार को दोपहर चोपाटी क्षेत्र में पागल कुत्ते ने 2 महिलाओं सहित सात लोगों को काटा, इन्हें चोपाटी पर बल्लू मिस्त्री सहित लोग पिपलिया स्वास्थ्य केन्द्र लेकर आए, लेकिन यहां इंटी रेबीज इंजेक्शन नही होने से मल्हारगढ शासकीय अस्पताल भेजा। चोपाटी पर सैनी कचोरी के पास कटिंग की दुकान पर बालागुढा निवासी रितिक सेन (22) को कुत्ते ने गुमटी चढकर मूह सहित 7 जगह काटा, पडोसी लालचंद सैनी, शंकरलाल सैनी सहित लोगों ने युवक को बमुश्किल छुडाया। गंभीर होने से युवक को मंदसौर रेफर किया। इधर

नगर परिषद् ने लोगों को काटने वाले 2 कुत्तों को पकडवाकर अन्यत्र छुडाया।

इंजेक्शन नही होने से परेशानी:–इंटी रेबीज इंजेक्शन लगाने की व्यवस्था पहले पिपलिया में थी, लेकिन पिछले दो वर्ष से यह डोज यहां उपलब्ध नही होने से लोगों ने मल्हारगढ जाना पड़ता है, कुत्ते के काटने के बाद रैबीज के महिने में 3 डोज लगाए जाते है, पीड़ित को तीन बार मल्हारगढ आना-जाना पड़ता है, उसे परेशानी का सामना करना पडता है। नगर सहित क्षेत्र में आए दिन कुत्ते के काटने की घटनाएं बढ रही है, एसे में करीब 20 हजार की आबादी वाले पिपलिया नगर के साथ ही आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को इंजेक्शन लगाने के लिए मल्हारगढ तक भटकना पड़ता है, वहां जाने के बाद भी उन्हें तय समय में बुलाया जाता है।

डोज महंगा होने से बदली व्यवस्था:–बीएमओ जितेन्द्र पाटीदार का कहना है कि इंटी रैबीज इंजेक्शन महंगा होकर 10 का डोज आता है, जिसकी बाजार कीमती करीब 5 हजार रुपए है। डोज एक बार खोलने के 4 घंटे बाद बेकार हो जाते है। पर्याप्त मात्रा में डोज भी उपलब्ध नही है, इस कारण पिपलिया, नारायणगढ के मरीजों को मल्हारगढ में डोज लगाने की व्यवस्था है। इसके अलावा बूढा, टकरावद, संजीत व झारडा में भी डोज रखवाए है, ताकि ज्यादा मरीज होने पर वहीं डोज लगाया जा सके। अधिकारियों को अवगत कराया है, 2 माह में पर्याप्त इंटी रेबीज डोज की व्यवस्था हो जाएगी।

ट्रेक्टर - कार में भिड़ंत – रामटेकरी से एमआईटी चौराहे जाते समय एक ट्रेक्टर और स्विफ्ट कार की भिड़ंत हो गई। इस दुर्घटना में ट्रेक्टर के दो टुकड़े हो गए। हालांकि, इस दुर्घटना में किसी के हताहत होने की जानकारी नहीं है।

नमामि गंगे अभियान पखवाड़ा के अंतर्गत...

बालाजी बावड़ी पर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने किया श्रमदान

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश शासन व जन अभियान परिषद के तत्वाधान में नयापुरा रोड बावडी वाले बालाजी की आस्था की प्रतीक बावडी पर स्वयं से भी संस्थाओं ने किया श्रमदान लगातार 4 दिनों से बावडी की सफाई का कार्य किया जा रहा है जिसमें मंदसौर की कई स्वयंसेवी संस्थाएं एवं सामाजिक कार्यकर्ता बढ चढकर हिस्सा ले रहे हैं। श्रमदान रोजाना सुबह 7 बजे से 9 बजे तक चलेगा बावडी से कचरा एवं गाज निकालने का कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता विनय दुबेला, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि अमन फरक्या, महेश दुबे, राजाराम तंवर, अजीज उल्ला खान, विनोद महेता, सुभाष जैन, संजय निमा, शोभित, नितिन सोनी, माया शर्मा (मप्र पुलिस), पैरा लीगल वालंटियर मोहिनी सिंह राणा, जन अभियान परिषद मंदसौर विकासखंड मंदसौर से चयनित नवांकुर संस्था के प्रतिनिधि दिनेश सोलंकी, रतनलाल चौहान, मंजू भावसार, लाला भाई अजमेरी एवं मंदसौर शहर के कई सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सड़क बनाने के लिए लगाए निशान गलत बताया, तो पीटा

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मारपीट के मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। खेड़ा खदान निवासी चन्द्रेश गुर्जर ने पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि सड़क बनाने के लिए लगाए चूने से लगाए गए निशान को मैंने गलत बताया कि मनुदेव पिता रंगलाल गुर्जर ने गाली-गलौज कर मारपीट की व जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने मनुदेव के खिलाफ केस दर्ज किया।

प्रेस क्लब तहसील मनासा रामपुरा की कार्यकारिणी घोषित, बैरागी बने अध्यक्ष

मनासा, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मनासा रामपुरा व कुकडेश्वर क्षेत्र सहित ग्रामीण अंचल के पत्रकारो के हितो के लिए विगत लगभग 4 वर्ष पूर्व से मनासा विधान सभा क्षेत्र में मप्र शासन द्वारा पंजीकृत पत्रकारो का संगठन - प्रेस क्लब मनासा रामपुरा की नवीन कार्यकारणी का गठन किया गया जिसमे इस क्लब में तीन उपाध्यक्ष तीन महामंत्री एक कार्यकारी अध्यक्ष की नियुक्ति तय की गई है। जिनका कार्यकाल 2 वर्ष रहेगा। संगठन के संरक्षक प्रभुलाल सियार व कैलाश राठौर की अनुशंसा से संगठन सचिव रमेश गुर्जर द्वारा घोषित की गई। जिसमे रजिस्टर्ड प्रेस क्लब मनासा रामपुरा के अध्यक्ष पद पर गोपालदास बैरागी कडी खुर्द (कुकडेश्वर) को नियुक्त किया गया है। वंही उपाध्यक्ष पद पर रूपेश सारू रामपुरा व बद्रीलाल गुर्जर देवरी खवासा मनासा को नियुक्त किया गया। कोषाध्यक्ष पद पर डॉ. बबलू चौधरी भाटखेड़ी यथावत है। वंही मदनदास बैरागी महागड़ को महासचिव पद पर नियुक्त किया गया। संगठन सदस्य के रूप में राकेश राठौर मनासा को यथावत रखा गया है। वंही मनासा विधान सभा क्षेत्र की एकमात्र महिला पत्रकार, रिया पिपलीवाल कुकडेश्वर को प्रेस क्लब मनासा रामपुरा की महिला प्रकोष्ट की अध्यक्ष पद पर नियुक्ति दी गयी है। उक्त घोषणा कोर कमिटी के संरक्षक व सदस्यों की सहमति से प्रेस क्लब मनासा रामपुरा के सचिव रमेश गुर्जर द्वारा पत्र जारी कर की गयी है।

तकनीकी अमले की निगरानी के बिना ही चल रहा 1700 करोड़ की जलजीवन मिशन परियोजना पर काम

प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को पूर्व विधायक सिसोदिया ने लिखा पत्र

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ओर मप्र की सरकार के प्रयासों से 64 वर्षो के लंबे अंतराल के बाद गांधीसागर जलाशय से जलजीवन मिशन के माध्यम से हर - घर, नल-जल योजना साकार होने जा रहीं है लेकिन 1700 करोड़ की इस परियोजना पर तकनीकि अमले की निगरानी के बिना ही तेजी से काम चल रहा है, ठेकेदार अपनी मर्जी के मुताबिक पाईल लाईन को घूमा रहा है और लेवल को मेंटेंन भी नहीं किया जा रहा है जिसके कारण महत्ती योजना फैल हो सकती है और जनता को इसका समुचित लाभ मिलने में भी संदेह है। इसको लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को पूर्व विधायक यशपालसिंह सिसोदिया ने पत्र लिखा और वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए पूरी योजना की मॉनिटरिंग कराऐ जाने का आगृह किया।

पूर्व विधायक श्री सिसोदिया ने तीसरी बार नरेन्द्र मोदी को भारत के प्रधानमंत्री बनने पर बधाई देते हुए पत्र में लिखा मंदसौर तथा नीमच जिला (मध्यप्रदेश) को प्रधानमंत्री की संकल्प शक्ति के चलते 64 वर्षो के लंबे इंतजार के बाद गांधीसागर (चंबल) के पानी को हर-घर, नल-जल योजना बनी और इसके अंतर्गत लगभग 1700 करोड रूपये की राशि स्वीकृत हुई है। श्री सिसोदिया ने कहा कि मुझे लगातार जनता की और से इस बात की शिकायत आ रही है कि बड़े पाईप एवं गांव मे बिछाई जा रही पाईप लाईन मे तकनीकी अमले की उपस्थिति मे लेवल नही लिये जा रहे है, पाईप लाईन को निर्माण ऐजेंसी (ठेकेदार) की सुविधानुसार दायें बायें घुमावदार करके ले जाई जा रही है इससे भविष्य में पाईप फुटेगें तथा प्रेशर मेंटन नहीं हो पायेगा, युद्धस्तर पर कार्य को तय समय पर किये जाने के कारण रात-दिन जे.सी.बी. एवं पोकलैंड मशीनो से कार्य किया जा रहा है जिसमे तकनीकी अमले द्वारा लेवल लेन का कार्य नही किया जा रहा है। इसके साथ ही सड़क के शोल्डर्स के समीप लार्ईन बिछाने से भविष्य में दिक्कत आयेगी। श्री सिसोदिया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव से आगृह किया कि का नल से हर घर जल मिल जाये इसके लिये भविष्य मे यह योजना तकनीकी कारणों की कमी के चलते फैल न हो जाये कि इस बात की मॉनिटरींग किये जाने के निर्देश जारी किए जाऐ ताकी बरसों से नागरिकों को जिस योजना का इंतजार था उनका सपना पूरा हो सकें।

अरनिया निजामुद्दीन में ग्राम सभा सम्पन्न

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। गंगे नमामि अभियान व त्रि-स्तरीय पंचायती राज अधिनियम के अंतर्गत कल ग्राम पंचायत अरनिया निजामुद्वीन मे 8 जून 2024 विशेष ग्राम सभा का आयोजन हुआ। आयोजित ग्राम सभा में सरपंच, सचिव, सहसचिव, एवं ग्राम विकास समिति नवांकुर बाजखेडी एवं पंचायत के आमजनो की मौजुदगी में ग्राम सभा में मुख्य बिंदु पर चर्चा हई। नमामी गंगे परियोजना अन्तर्गत निर्देश पर चर्चा

हुई जिसमे प्रमुख रूप से स्कुल आंगनवाडी केन्द्रो मे स्वच्छ जल की उपलब्धता। शुद्ध पेय जल की नियमित उपलब्धता तथा नलजल योजना के रख रखाव पर की व्याख्या। कुपोषण मुक्त गांव पर चर्चा। अन्त्योदय सर्वे पर चर्चा। गंगे नमामि अभियान को गति देने पर सहमति बनी। शासन की जनकल्याणकार योजनाओं की जानकारी व अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की अनुमती में पारित हुए। इस ग्राम सभा मे ग्राम पंचायत के सरपंच मुबारिक भाई, उपसरपंच प्रतिनिधि, राजाराम सचिव, नवंकुर समिति बाजखेडी बानोबी, मुजु भावसार, ललिता, मुमताज भाई, सद्धाम भाई, आमीन भाई, हुसैन बी, शाईन बी, भागीरथी, भूरा भाई व गणमान्य उपस्थित रहे।

जल गंगा समर्थन अभियान से 300 वर्ष पुरानी बावडी मूल स्वरूप में दिखने लगी...

पुरानी बावड़ियों, तालाबों का जीवन पुन: संवरने लगा

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जल गंगा समर्थन अभियान 5 जून से 16 जून तक चलाया जा रहा है। इस अभियान के माध्यम से जिले की जितने भी पुरानी जल संरचनाओं की साफ सफाई एवं जीर्णोधार का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में मंदसौर शहर में कला खेत वार्ड नंबर 18 में स्थित लगभग 300 से 400 वर्ष पुरानी बावड़ी का भी जीर्णोद्वार किया जा रहा है। यह बावडी बहुत ही ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल की बावडी है। जहां पर जिला प्रशासन एवं जन अभियान परिषद के माध्यम से जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। बावडी से पुरानी गाद निकाली जा रही है। इसमें आम जनता भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। साफ सफाई एवं गाद निकालने के कारण बावडी के आसपास रहने वाली जनता भरपूर सहयोग प्रदान कर रही है। जब बावडी की साफ सफाई की जा रही थी तो लोगों के अंदर उत्साह देखने को मिल रहा है। यह बावडी धार्मिक आस्था का भी महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां पर बडी संख्या में दूर-दूर से धार्मिक लोग भी आते हैं तथा इस बावडी के पानी का प्रयोग करते हैं। बताते हैं कि बावडी के पानी के प्रयोग करने से छोटी-मोटी बीमारियां समाप्त हो जाती हैं। इस वजह से भी इस बावडी का विशेष महत्व है।

तालाब की सफाई कर स्कूल में प्रतियोगिता करवाई

नारायणगढ़, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नगर परिषद नारायणगढ द्वारा जल स्रोतों के संरक्षण एवं पुनजीवन हेतु दिनांक 08 जून 2024 को नगर के मध्य तालाब की विशेष साफ सफाई कराई गई उसके पश्चात शासकीय कन्या हायर सेकंडरी स्कूल नारायणगढ में निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। प्रमोद जैन सीएमओ नारायणगढ द्वारा बताया गया कि प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने वाले बचों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार नगर परिषद द्वारा 16 जून 2024 वितरण किया जावेगा। आज के कार्यक्रम में नगर परिषद अध्यक्ष महोदय श्रीमती ममता जी कुँवर चौहान, उपाध्यक्ष महोदय वीरेंद्र जी रूपरा, वार्ड पार्षद दशरथ जी भास्कर, जनप्रतिनिधि श्री जयराज सिंह चौहान, स्कूल के प्राचय एवं शिक्षकगण, मुख्य नगर पालिका अधिकारी महोदय प्रमोद जैन, पार्षद पुष्पा ओमप्रकाश मूंदडा, पार्षद प्रीति विनोद खिचावत एवं नगर परिषद कर्मचारीगण उपस्थित थे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से जिले में 194 जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार शुरू

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से जिले के 194 तालाबों एवं 56 बावडीयो का जीर्णोद्धार किया जाएगा। साथ ही जिले के 500 स्थान पर किया जाएगा वृक्षारोपण किया जाएगा। इस अभियान के पश्चात जितनी भी पुरानी जल संरचनाए वापस अपने पुन: मूल स्वरूप में आएगी। जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान को साझा प्रयासों से मूर्तरूप दिया जा रहा है। अपने-अपने गाँव की पुरानी जल संरचनाओं को सहेजने के लिये ग्रामीणजन उत्साह के साथ आगे आ रहे हैं। जिले के ग्रामीण अंचल में अब तक जन सहयोग से पुरानी जल संरचनाओं के पुनर्जीवन का काम शुरू हो चुका है। इन संरचनाओं से जल ग्रहण क्षमता में बढोत्तरी होगी। जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार में अधिकाधिक जनभागीदारी हो रही है, जिससे ये संरचनाएँ गुणवत्ता के साथ पुनर्जीवित हों रही है। साथ ही इनके प्रति स्थानीय लोगों में लगाव पैदा होगा। जल संरचनाओं के आसपास देख-रेख के पुख्ता इंतजामों के साथ वृहद स्तर पर वृक्षारोपण भी होगा। जल गंगा संवर्धन अभियान के साथ वृक्षारोपण की तैयारी, बरसात से पूर्व पुल-पुलियों व सड़कों की मरम्मत, आपदा प्रबंधन, डेंगू व मलेरिया की रोकथाम, खरीफ के लिये खाद-बीज की व्यवस्था, स्कूल चलें हम व कॉलेज चलें अभियान, अस्पतालों और मॉल की फायर ऑडिट सहित राज्य सरकार के प्राथमिकता वाले कार्य भी करवाए जा रहे है।

आईसीएआई द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार ही ऑडिट रिपोर्ट तैयार करें

मंदसौर सीए ब्रांच द्वारा टैक्स ऑडिट के प्रावधानों पर वर्कशॉप का आयोजन

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। टैक्स ऑडिट प्रारंभ करने के पूर्व हमें कर कानूनों का गहराई के साथ अध्ययन करना नितांत आवश्यक है। यदि टैक्स ऑडिट फार्म में किसी प्रश्न के जवाब में एक से अधिक राय बनती है तो सदैव इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंटस ऑफ इंडिया द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार ही ऑडिट रिपोर्ट तैयार की जानी चाहिये। टैक्स ऑडिट में हमारी थोड़ी सी लापरवाही हमारे करदाता को तो परेशानी में डाल ही देती है, साथ ही चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट सदस्य के लिये भी परेशानी का सबब बन सकती है।

उक्त विचार आयकर के प्रखर वक्ता इंदौर से पधारे वरिष्ठ चार्टर्ड अकाउंटेंट सीए राजेश मेहता ने दि इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया की टैक्स ऑडिट क्वालिटी रिव्यू बोर्ड व मन्दसौर ब्रांच द्वारा आयोजित टैक्स ऑडिट वर्कशॉप को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। दि इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट्स ऑफ इंडिया की रीजनल कौंसिल के सदस्य व ओजस्वी वक्ता इन्दौर से पधारे सीए कीर्ति जोशी ने पार्टनरशीप फर्म के आयकर निर्धारण से संबंधित प्रावधानों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि कर कानूनों की पेचिदगियों को समझे बिना आयकर विवरणी दाखिल कर देने पर पार्टनरशिप फर्म को किस प्रकार से पेनल्टी के रूप में आर्थिक नुकसान का सामना करना पड सकता है। आपने उपस्थित सदस्यों की जिज्ञासा को शांत करते हुए पार्टनरशिप फर्म की कर विवरणी दाखिल करते समय किन किन प्रावधानों को ध्यान रखा जाना चाहिये, इस बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत भाषण के दौरान ब्रांच चेयरमेन सीए दिनेश जैन ने मन्दसौर ब्रांच द्वारा किये जा रहे कार्यो के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि मन्दसौर ब्रांच लगभग हर सप्ताह एक बड़ा शैक्षणिक सेमिनार आयोजित कर रही है, जिसका लाभ ब्रांच के सदस्यों के साथ साथ उनके करदाताओं को भी प्राप्त हो रहा है। उक्त वर्कशाप का आयोजन सेंट्रल कौंसिल सदस्य सीए अनुज गोयल के मार्गदर्शन में किया गया। अतिथि का स्वागत ब्रांच चेयरमैन सीए दिनेश जैन, सचिव सीए विकास भंडारी, उपाध्यक्ष सीए राजेश मंडवारिया, कोषाध्यक्ष सीए नयन जैन, सीपीई चेयरमैन सीए वीरेंद्र जैन, कमिटी मेंबर सीए अर्पित नागदा ने माला से किया। उद्घाटन समारोह में टैक्स बार एसोसिएशन के संरक्षक शांतिलाल डोसी और अध्यक्ष मुकेश पारिख द्वारा भी अतिथि का माला से

स्वागत किया गया। कार्यक्रम में सीए मेंबर द्वारा टैक्स बार एसोसिएशन के पदाधिकारी का स्वागत किया गया। सीए नयन जैन ने सीए राजेश मेहता का परिचय दिया सीए रोहन सोमानी ने सीए कीर्ति जोशी का परिचय दिया। कार्यक्रम में 85 से अधिक मेंबर उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आयकर अधिकारी श्री संजीव कुमार मालिक को सीए दिनेश जैन, सीए विकास भंडारी, सीए वीरेंद्र जैन ने मोमेंटो दिया। सीए राजेश मेहता को सीए नयन जैन, सीए अर्पित नागदा, सीए अंकुश जैन ने मोमेंटो दिया। सीए कीर्ति जोशी को सीए कमलेश पाटीदार, सीए योगेन्द्र जैन, सीए कुलदीप पाटीदार, सीए राजेश जैन ने मोमेंटो दिया। सीए मोटो सांग नंदिनी बैरागी व प्रेक्षा बाफना द्वारा प्रस्तुत किया गया। संचालन सीए आयुष जैन ने किया। आभार सीए अर्पित नागदा ने माना।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्यिा एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है।
फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in